JAIN VISHVA BHARATI

an institute dedicated to human values

Ladnun Office : Post Box No. 8, Post - Ladnun - 341 306, Dist. Nagaur, Rajasthan (India)
Phone :+91-1581-222025/080/977, Fax : +91-1581-223280,
Email : secretariatldn@jvbharati.org

Kolkata Office : Mahasabha Bhawan, 3, Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001
Phone : +91-33-2235 9800, Fax : +91-33-2235 9799
Email : secretariatkol@jvbharati.org

वर्ष 1 | अंक 1 | जनवरी-मार्च, 2011

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

कामधेनु

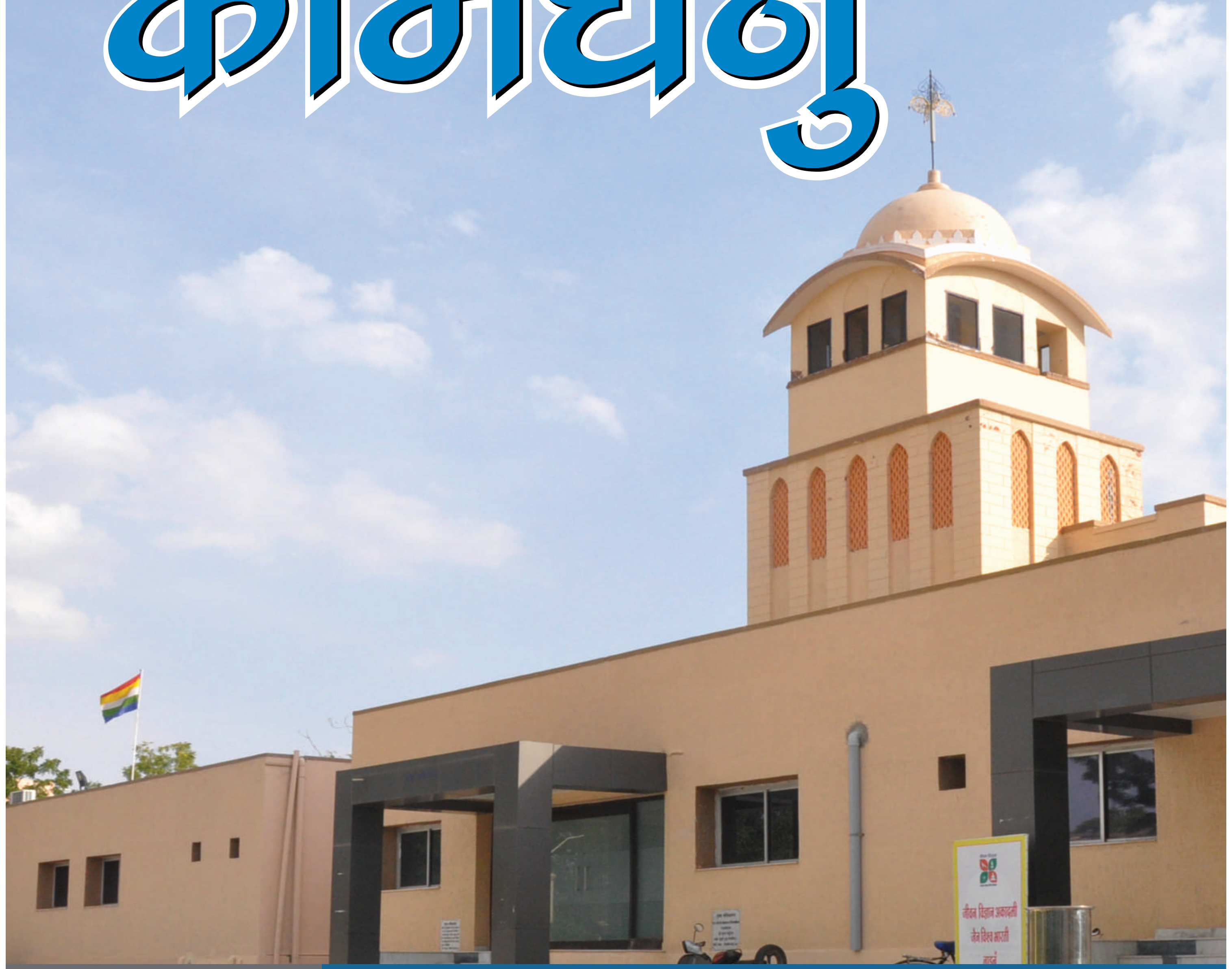

आवरण आलेख इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा का स्वरूप | 29

अन्तर्पृष्ठीय

गुरु चरणों से पावन होती जैन विश्व भारती | 16

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन का लोकार्पण | 18

दीक्षान्त समारोह | 20

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय : विजन 2020 | 22

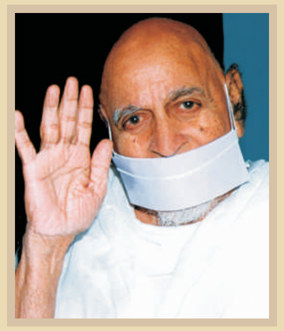

जैन विश्व भारती समस्त भारतीय एवं प्राच्य आत्म-विद्याओं का केन्द्र है। इस संस्थान के माध्यम से आत्म-विद्याओं के शोध, अध्ययन एवं प्रसार की विभिन्न प्रवृत्तियों का संचालन हो रहा है।

जैन विश्व भारती एक उदीयमान संस्था है। मैं इसके उज्ज्वल भविष्य के प्रति तनिक भी संदिग्ध नहीं हूं, क्योंकि संपूर्ण श्रावक समाज इसके विकास की दृष्टि से जागरूक है। अधिकारी वर्ग अपने दायित्व निर्वहन के प्रति सचेष्ट हैं। विद्वत वर्ग भी समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझावों के माध्यम से इस संस्थान को सींच रहा है। यदि जागरूकता, दायित्व-निर्वहन एवम् सिंचन का क्रम बराबर चलता रहे तो मेरा आत्मविश्वास कहता है कि यह संस्थान अपनी गति से आगे बढ़ता हुआ न केवल जैन समाज के लिए, अपितु समग्र मानव समाज के लिए एक वरदान सिद्ध होगा।

आचार्य तुलसी

(प्रवचन पाथेय, भाग-5)

आचार्य तुलसी ने जो एक धर्मक्रांति का मार्ग प्रशस्त किया वह आगे बढ़ रहा है। उसमें जैन विश्व भारती का स्थान पहला है। विश्व भारती की टीम से मुझे संतोष है क्योंकि वह अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्था के प्रति जागरूक है। विश्व भारती का आकार छोटा है पर प्रकार बड़ा है। यहां के प्रति लोगों में अवधारणा है कि यह मानव समाज और व्यक्तित्व निर्माण के लिए कल्याणकारी संस्था है। व्यक्तित्व निर्माण की एक कड़ी है - स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ अर्थव्यवस्था। अहिंसा, शांति एवं अर्थशास्त्र ये तीन चीजें यहां से आगे बढ़ें। जो गुरुदृष्टि से कार्य करता है वह आगे बढ़ता है। आचार्य तुलसी की तरह कल्पनाशील, विचारशील व आचारनिष्ठा से सब कार्य करें तो कार्य सफल हो जाता है। गुरुदेव तुलसी ने ऐसे सूत्र दिए जो वरदान बनकर हमें सफल बना रहे हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ

विज्ञप्ति (साप्ताहिक), अंक - 49, 18-24 मार्च 2007

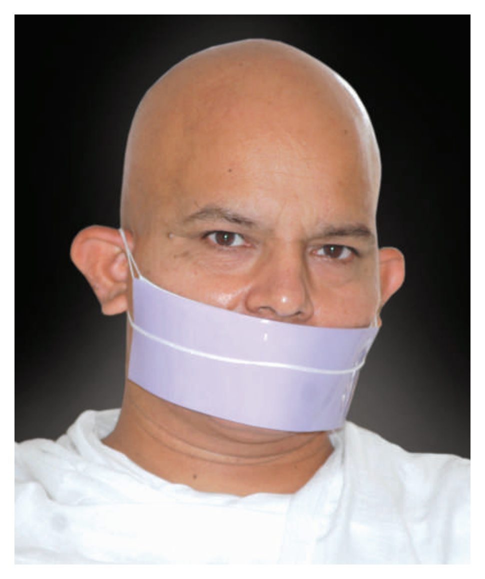

आशीर्वचन

अर्हम्

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने जैन विश्व भारती को **'कामधेनु'** कहा था। उसके द्वारा विभिन्न गतिविधियां चलाई जा रही हैं। उनकी जानकारी संस्था से जुड़े व्यक्तियों को प्राप्त हो, यह समुचित है। इस दृष्टि से प्रारंभ की जा रही पत्रिका संस्था के सदस्यों में पवित्र कार्य करने की प्रेरणा देने में सक्षम बने। शुभाशंसा।

विजयनगर
18 मार्च, 2011

आचार्य महाश्रमण

संजीवन बोल

आचार्यश्री तुलसी की स्वप्न-शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है – 'जैन विश्व भारती'। शिक्षा, साधना, शोध, साहित्य, सेवा, संस्कृति और समन्वय – इन सात शकार/सकार वाली प्रवृत्तियों की संचालक यह संस्था पिछले चार दशकों से काम कर रही है। अपनी कतिपय प्रवृत्तियों के आधार पर इसने राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त की है।

आचार्यश्री तुलसी के मुखारविंद से जैन विश्व भारती के लिए अनेक बार 'कामधेनु' शब्द का प्रयोग हुआ। इसकी बहुआयामी गतिविधियों के आधार पर प्रमाणित हो रहा है कि यह वास्तव में कामधेनु की भूमिका का निर्वाह कर रही है।

जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों ने संस्था के सदस्यों की जागरुकता बढ़ाने के लिए 'कामधेनु' नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका प्रारंभ करने का चिन्तन किया। चिन्तन निर्णय में बदला। निर्णय की क्रियान्विति के रूप में पत्रिका का प्रथम अंक पाठकों के हाथों में पहुँचने वाला है।

संस्था के भौतिक शरीर के निर्माण, संरक्षण एवं संवर्धन का दायित्व समाज का है। इसके आध्यात्मिक शरीर की संरचना, संपोषण एवं विकास में आचार्यश्री – आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण का असाधारण अनुग्रह मिलता रहा है। ऐसे महान आचार्यों के आशीर्वाद से ही संस्था प्राणवान रह सकती है।

जिस उद्देश्य से 'कामधेनु' पत्रिका की योजना बनी है, वह अपने उद्देश्य में सफल बने यही मंगल कामना है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

वर्ष 1 | अंक 1 | जनवरी-मार्च, 2011

कामधेनु

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

परामर्श
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रकाशक
जितेन्द्र नाहटा, मंत्री
जैन विश्व भारती

संपादक
डॉ. वन्दना कुण्डलिया

संपादन-सहयोग
राजेन्द्र खटेड़

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : =91-1581-222025/080
फैक्स : +91-1581-223280
ई-मेल : secretariatldn@jvbharati.org

मुद्रक
आकार अक्षर
7/1 बी, ग्रान्ट लेन,
कोलकाता - 700 012

अनुक्रम

आशीर्वचन — आचार्य महाश्रमण 1
संजीवन बोल — साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा 2
उपोद्घात — प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार 4
अध्यक्षीय — सुरेन्द्र चोरड़िया 5
संपादकीय — डॉ. वन्दना कुण्डलिया 6
दस्तावेज — अतीत के वातायन से 7
अभ्युदय एवं विकास — जैन विश्व भारती : रजत-रेणु पर प्रस्फुटित प्रसून 8
प्रबंधन तंत्र — जैन विश्व भारती : नए प्रबंधन से नई संभावनाएँ 9

आहलादक शुभागमन
- विशिष्ट महानुभावों का जैन विश्व भारती में शुभागमन 13
- जैन विश्व भारती में नये सदस्य 13

प्रगति पदचिह्न
- अधिशास्ता के रूप में आचार्य श्री महाश्रमण का प्रथम बार जैन विश्व भारती में पदार्पण 14
- गुरु चरणों से पावन होती जैन विश्व भारती की धरा 16
- आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन का लोकार्पण 18
- जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का छठा दीक्षांत समारोह 20
- जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय : विजन 2020 22
- जीवन विज्ञान पुरस्कार समारोह 23
- विद्युत चुंबक चिकित्सा केन्द्र का शुभारंभ 23
- नेपाल-बिहार भवन का निर्माण 23
- जैन विश्व भारती की निर्माणाधीन योजनाएं 24
- राष्ट्रीय पुस्तक मेला, जयपुर में आचार्य महाप्रज्ञ बुक स्टॉल 26
- कोलकाता पुस्तक मेले में जैन विश्व भारती की प्रथम बार प्रतिभागिता 27
- प्रकाशित पुस्तकें 28

आलेख : इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा का स्वरूप / *आचार्य महाप्रज्ञ* 29
विश्व पटल पर जैन विश्व भारती : विदेशों में संचालित केन्द्रों के कार्यक्रम 31

सिकता पर अंकित शिलालेख
- मेरी कर्मस्थली : जैन विश्व भारती / *डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञा* 32
- जैन विश्व भारती में प्रेक्षाध्यान का अनोखा उपक्रम / *प्रो. बाबूलाल नाहटा* 32
- जैन विश्व भारती : एक सुरम्य परिवेश / *डॉ. रेचल* 33
- ऊर्जादायी केंन्द्र / *कुसुमलता सुराना* 34

पैनी दृष्टि : शासन व्यक्ति नहीं, मौलिकता करती है / *धर्मचन्द चौपड़ा, पूर्व अध्यक्ष* 35
संस्मरण : नए सफर का अनुभव / *समणी शुक्लप्रज्ञा, समणी विनयप्रज्ञा* 36

अर्हता को अधिमान
- श्री सुमेरमल सुराणा को सरोपा सम्मान 38
- डॉ. महावीर गोलछा को इन्सपायर अवार्ड 38

कृती कर्मी
- संस्थान का वरिष्ठतम कर्मी : श्री नथमल सांखला 39
- परिवार एक योगदान अनेक : श्री रवीन्द्र महतो और उनका परिवार 39

बाल पृष्ठ
- भारत हमारा देश / *दिया सिंगल* • सफलता / *प्रेक्षा सोनी*
- पर्यावरण प्रेम / *मालविका सुथार* • समझें वक्त का मोल / *श्रेय चोरड़िया* 40

उपोद्घात

जैनं वश्वभ ारतीक ेक ामधेनुके रू पमें जे ोक ल्पनाक ीग ईहै ,उ सेस ाकारक रनेके ि लए शिक्षा आदि सात सकारों की प्रवृत्तियों को अधिकाधिक विकसित करना होगा।

आज सम्पूर्ण मानव-समाज जिन समस्याओं से ग्रस्त है उनका समाधान केवल भौतिक विकास से सम्भव नहीं है - इस सत्य को ध्यान में रखकर गणाधिपति श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अभिनव आयामों का प्रवर्तन किया। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अहिंसा-प्रशिक्षण, सापेक्ष अर्थशास्त्र आदि के माध्यम से मानव-चेतना का रूपान्तरण कर उसके आचरण और व्यवहार को परिष्कृत किया जाए - यही है एकमात्र उपाय जिससे हिंसा, आवेश, क्रूरता, शोषण, स्वार्थ आदि वृत्तियां क्रमशः क्षीण होंगी तथा आध्यात्मिकता, नैतिकता आदि के मूल्य मनुष्य - जीवन में साकार हो सकेंगे।

जैन विश्व भारती अपनी विभिन्न इकाइयों के माध्यम से इसी दिशा में प्रयत्नशील है। आचार्य श्री महाश्रमणजी का सतत मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। चारित्रात्माओं तथा समणी-वर्ग का सक्रिय सहयोग निरन्तर प्राप्त हो रहा है। अपेक्षा है, सम्पूर्ण समाज सुसंगठित होकर जैन विश्व भारती रूपी 'कामधेनु' के विकास में सहभागी बने।

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार
(प्रभारी संत - जैन विश्व भारती)

अध्यक्षीय

आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व संत, दार्शनिक, युगदृष्टा, समाजोद्धारक एवं संस्था-प्रणेता का एक विलक्षण सम्मिश्रण था। संस्था-निर्माण यद्यपि उनका लक्ष्य नहीं था, किन्तु मानवीय मूल्यों एवं नैतिक सूत्रों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था उनके विश्व-परिवर्तन के लक्ष्य का एक साधन था। जैन विश्व भारती की स्थापना की पृष्ठभूमि में आचार्य तुलसी का यह चिंतन सर्वोपरि था।

आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु जैन विश्व भारती आज केवल एक संस्था के रूप में नहीं, अपितु मानव कल्याणकारी प्रवृत्तियों के केन्द्र, प्राच्य एवं जैन विद्या की संरक्षण स्थली एवं आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व-निर्माण स्थल के रूप में विविध दिशाओं में कार्य कर रही है। समाज-परिवर्तन एवं समाज-विकास की आचार्य तुलसी की प्रबल उत्कंठा को जैन विश्व भारती ने यथार्थ में परिणित करने का प्रयास किया है। इस संस्था के माध्यम से आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण का भविष्योन्मुखी एवं युगान्तरकारी चिंतन देश की सीमाओं के पार पहुंचा, जिस कारण से आज जैन विश्व भारती प्रस्तर खण्डों में नहीं, अपितु लोकमानस में प्रतिष्ठित है।

शिक्षा, शोध, सेवा, साधना, साहित्य, संस्कृति एवं समन्वय के सात 'सकारों' को केन्द्र में रखकरज ैनं वश्वभ ारतीअ ाचार्यत ुलसी,अ ाचार्यम हाप्रज्ञए वंअ ाचार्यम हाश्रमणके स वप्नों को साकार करने की दिशा में निरन्तर गतिमान होती रहे तथा जैन विश्व भारती की गतिविधियों को प्रतिबिम्बित करने वाली 'कामधेनु' संस्था के क्रियाकलापों को नई पहचान दे, इसी शुभाकांक्षा के साथ!

सुरेन्द्र चोरड़िया
अध्यक्ष
जैन विश्व भारती

संपादकीय

यह एक सर्वविदित एवं प्रमाणित तथ्य है कि जहाँ सुकरात और प्लेटो को पाकर एथेन्स की धरा धन्य हो गई, सीजर और सीसरो ने रोम के रोम-रोम में रमणीयता भर दी थी, नेपोलियन को पाकर फ्रांस का भाग्य चमक उठा था ठीक उसी प्रकार भारतीय धरा आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के नैतिक और आध्यात्मिक नेतृत्व से गौरवान्वित हुई।

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की दूरदर्शिता, सुझ-बूझ और गतिशील सोच ऐसी विश्वस्तरीय संस्था के निर्माण हेतु उत्कंठित थी, जो नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति कटिबद्ध हो तथा जैन विद्या का विश्वव्यापी केन्द्र बने। पूज्यप्रवरों की यह कल्पना यथार्थ में परिणत हुई आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व जब जैन विश्व भारती नामक संस्था ने आकार लिया। आचार्यद्वय के आध्यात्मिक और नैतिक मार्गदर्शन में पल्लवित और पुष्पित होकर यह संस्था आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु के रूप में लब्धप्रतिष्ठित हुई।

आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु- जैन विश्व भारती विगत चार दशकों से शिक्षा, शोध, सेवा, साहित्य, साधना, समन्वय और संस्कृति के ‘सप्तसकार’ में अपनी क्रियाकलापों एवं गतिविधियों को संपादित कर आकार और महत्व को निरन्तर वर्धापित कर रही है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के स्नेहाशीर्वाद और आचार्य महाश्रमण के सशक्त आध्यात्मिक दिशानिर्देश में जैन विश्व भारती निरन्तर प्रगति के शिखरों की ओर गतिमान है। आज यह संस्थान प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा की प्रयोगस्थली के रूप में तथा प्राच्य विद्याओं के शोध, प्रेक्षाध्यान एवं अहिंसा के शिक्षण-प्रशिक्षण के विशिष्ट केन्द्र के रूप में उभर रही है।

सप्तसकार के क्षेत्र में जैन विश्व भारती द्वारा संपादित की जाने वाली विविध गतिविधियों को व्यापक जनमत एवं पहचान प्राप्त हो इस आकांक्षा के साथ ‘कामधेनु’ का यह प्रथम अंक प्रस्तुत है। इस अवसर पर यही मंगलकामना है –

“कल जहाँ थे वहाँ से कुछ आगे बढ़ें
अतीत को ही नहीं भविष्य को भी पढ़ें
अब तक जो बना है स्वर्णिम इतिहास
हम उससे आगे का इतिहास गढ़ें।”

डॉ. वन्दना कुण्डलिया

पुनश्च : *जैन विश्व भारती परिवार के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे कामधेनु में प्रकाशनार्थ अपने आलेख, रचनाएं, विचार, संस्मरण, उल्लेखनीय उपलब्धियां आदि पत्रिका में दिए गए पते पर प्रेषित करें।*

अतीत के वातायन से

आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु “जैन विश्व भारती” का अपना एक विशिष्ट इतिहास है। इस स्तम्भ में प्रस्तुत है जैन विश्व भारती का यह कालजयी इतिहास जो इसकी कल्पना से लेकर वर्तमान स्वरूप को पाठकों के सम्मुख रखेगा –

सन् 1959 में कलकत्ता चातुर्मास के दौरान अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश रामविनोद पाल जी ने आचार्य तुलसी के दर्शन किए। उन्होंने आचार्यप्रवर से वार्तालाप के दौरान कहा – आप इस महानगर के जैन लोगों से कहिए कि वे जैन विश्वविद्यालय की स्थापना करें। रामविनोद पाल जी से पूर्व प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कालिदास नाग ने भी यह विचार आचार्य तुलसी के सम्मुख रखा था। किन्तु रामविनोद पाल जी ने इस बात पर बहुत बल दिया जिसके परिणामस्वरूप जैन धर्म एवं दर्शन की शिक्षा तथा प्रचार-प्रसार पर चर्चा-परिचर्चा प्रारंभ हो गई।

तेरापंथ द्विशताब्दी वर्ष 1960 में आचार्य तुलसी का चातुर्मास मेवाड़ क्षेत्र के राजसमंद में था। देश भर के विभिन्न प्रान्तों से सैकड़ों श्रद्धालु परिवार एवम् श्रावक समाज गुरु उपासना में समुपस्थित थे। श्रद्धालु परिवारों में सरदारशहर के श्रद्धाशील श्रावक श्री सुमेरमलजी दूगड़ अपनी मातुश्री, पत्नी, ज्येष्ठ पुत्र भंवरलालजी दूगड़ एवं अन्य परिवारजनों के साथ उपासनारत थे।

एक बार रात्रि के समय भंवरलालजी दूगड़ आचार्य तुलसी की उपासना में रत थे तथा शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के संबंध में विचार-विमर्श भी चल रहा था। इस सन्दर्भ में आचार्यप्रवर ने भंवरलालजी से कहा - “भंवरजी ! तुमने अनेक दिशाओं में अनूठे कार्य किए हैं। समाज में अनेक प्रवृत्तियों का प्रारंभ किया है। पर एक दिशा बंद रह गई। धर्मसंघ की दृष्टि से तुमने कभी कुछ सोचा है क्या ?” आचार्यप्रवर के इस प्रश्न से एकाएक सहम कर कुछ क्षण पश्चात अपने बुद्धि कौशल से आचार्यप्रवर के अव्यक्त संकेत को समझकर भंवरलालजी दूगड़ बोले – ‘गुरुदेव ! यह मेरी भूल रही। मैंने इस विषय में अभी तक ऐसा सोचा ही नहीं। जल्दी ही कोई योजना बनाकर निवेदन करूंगा।’

इस प्रसंग के बाद श्री भंवरलालजी दूगड़ के उर्वर मस्तिष्क में जैन विश्व भारती की अव्यक्त कल्पना विभिन्न रूपों में आकार पाने लगी। जैन धर्म एवं दर्शन के प्रचार-प्रसार की बृहद योजना उनके चिंतन में आई, जिसका प्रत्यक्ष रूप जैन विश्व भारती की कल्पना के रूप में उभर कर आया। गहन चिंतन मनन के पश्चात भंवरलालजी ने जैन विश्व भारती की स्थापना हेतु सरदारशहर के गांधी विद्या मंदिर के निकट के स्थान का प्रस्ताव गुरुचरणों में प्रस्तुत किया।

राजसमंद से उपासना परिसम्पन्न कर भंवरलालजी पुनः सरदारशहर पहुंचे और जैन विश्व भारती की योजना में लग गए। इस संदर्भ में वे सर्वप्रथम जयचंदलालजी दफ्तरी और डॉ. नथमलजी टांटिया से मिले और उनसे विचार-विमर्श कर जैन विश्व भारती की कल्पना को मूर्त रूप देने हेतु विस्तृत योजना बनाई। इस योजना में प्राथमिक रूप से निम्न दो कार्य जैन विश्व भारती हेतु निश्चित किए गए :-

1. जैन धर्म और दर्शन की उच्च शिक्षा की व्यवस्था
2. विशाल पुस्तकालय का निर्माण

जैन विश्व भारती के कार्य क्षेत्र के निर्धारण के साथ ही स्थान का प्रश्न भी महत्वपूर्ण था। इस संबंध में किसी प्रकार का निर्णय लेने के लिए भंवरलालजी ने जयपुर जाकर तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया से मिलना उचित समझा। अतएव आचार्यप्रवर को जैन विश्व भारती की कार्ययोजना की अवगति देने से पूर्व उन्होंने जयपुर जाने का निर्णय किया।

7 मार्च 1961 को श्री भंवरलालजी दूगड़, श्री जयचंदलालजी दफ्तरी, श्री जयचंदलालजी बोथरा आदि ने जयपुर हेतु प्रस्थान किया। किन्तु नियति का योग ऐसा बना कि सीकर के पास उनकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिसमें वे गंभीर रूप से घायल हो गए। अनेक चिकित्सकीय प्रयासों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। इस प्रकार जीवन के पांचवे दशक में प्रवेश करते ही जैन विश्व भारती का मूल कल्पनाकार चला गया। उस कल्पनाकार की कल्पना के कारण ही लगभग एक दशक के बाद सन् 1970 में जैन विश्व भारती ने आकार लेना प्रारंभ किया।

.... (शेष इतिहास क्रमशः अगले अंक में)

जैन विश्व भारती : रजत-रेणु पर प्रस्फुटित प्रसून

राजस्थान धोरों की धरती है जहां का अधिकांश भू-भाग रेतीला एवं शुष्क है। इस मरुभूमि के नागौर जिले में बसा एक स्थान - जैन विश्व भारती, मरुभूमि की परिभाषा के सर्वथा विपरीत है। सघन हरियाली और पेड़-पौधों से आच्छादित इस क्षेत्र को हरित परिसर की संज्ञा दी जा सकती है। प्राकृतिक वैभव से संपन्न, नयनाभिराम उपवनों एवं उद्यानों से सुसज्जित तथा सुन्दर वृक्षों, पौधों, फूलों और लताओं से परिपूर्ण जैन विश्व भारती का हरित परिसर एवं सुरम्य वातावरण प्रत्येक आगन्तुक को आनंद और आह्लाद से भर देता है। जैन विश्व भारती का यह रमणीय परिसर साधक, विद्यार्थी और तत्वशोधक सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

प्राचीन जैन विद्याओं का पुनरुद्धार कैसे हो? आचार्य तुलसी की सन्निधि में हमारा बहुत चिंतन चला और जैन विद्याओं को दुनिया के सुदूर अंचलों तक पहुंचाने के लिए प्रयत्न शुरु हुआ। उसी प्रयत्न का परिणाम है समणियों की विदेश यात्रा। आज विदेशों में हमारे अच्छे प्लेटफॉर्म बन चुके हैं, जैन विश्वभारती के सेंटर कायम हुए हैं। कई देशों में हमारी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है हो रहा है। आगम के ग्रंथों की वहां से मांग आ रही है।

जैन विश्वभारती की स्थापना का उद्देश्य भी यही था कि प्राचीन जैन विद्याओं का यहां से विकास हो, उस पर बड़े पैमाने पर काम हो। उसी चिंतन के परिणामस्वरूप यहां विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। जो इस कार्य को आगे बढ़ा रहा है। अपनी शक्ति को, अपनी संपदा को दूसरों तक पहुंचा रहा है। आगे से आगे अभी और बहुत संभावनाएं हैं। प्रगति की यह रफ्तार धीमी नहीं पड़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती : नए प्रबंधन से नई सम्भावनाएं

किसी भी संस्था अथवा संगठन का चतुर्दिक विकास इसके पदाधिकारियों एवं सदस्यों के उर्वर चिंतन, सक्रिय योगदान एवं समर्पित निष्ठाभाव पर निर्भर करता है। जैन विश्व भारती की नव निर्वाचितट ीमए ेसीं वशिष्टताओंक ेल ेकिरअ पने ेएस ंगठनअ ैरन ेएं चितनके स ाथए कन ेए भविष्य के अंकन हेतु दृढ़संकल्पित है। प्रस्तुत है आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण के स्वप्नों को साकार करने में अनवरत क्रियाशील जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित/नवमनोनीत प्रबंधन तंत्र का संक्षिप्त परिचय :–

कुलपति (सत्र 2010-12)

श्री झूमरमल बैंगानी, बीदासर

पदाधिकारी (सत्र 2010-12)

1.	श्री सुरेन्द्र चोरड़िया	कोलकाता	अध्यक्ष
2.	श्री सुमेरमल सुराणा	कोलकाता	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
3.	श्री बजरंगलाल बोथरा	नोएडा	उपाध्यक्ष
4.	श्री बसन्त कुमार पारख	कोलकाता	उपाध्यक्ष
5.	श्री भीकमचन्द नाहटा	मुम्बई	उपाध्यक्ष
6.	श्री इन्द्रचन्द दुधेड़िया	बैंगलोर	उपाध्यक्ष
7.	श्री जितेन्द्र नाहटा	कोलकाता	मंत्री
8.	श्री अरविन्द गोठी	नई दिल्ली	संयुक्त मंत्री
9.	श्री विजयसिंह चोरड़िया	कोलकाता	संयुक्त मंत्री
10.	श्री पारस बोहरा	कोलकाता	कोषाध्यक्ष

ट्रस्टीगण (सत्र 2010-12)

1.	श्री रणजीतसिंह कोठारी	कोलकाता	प्रधान ट्रस्टी
2.	श्री रमेश कुमार हमेरलाल धाकड़	मुम्बई	संयुक्त प्रधान ट्रस्टी
3.	श्री धर्मचन्द लूंकड़	चेन्नई	ट्रस्टी
4.	श्री जयसिंह सेठिया	जयपुर	ट्रस्टी
5.	श्री नरपतसिंह चोरड़िया	बैंगलोर	ट्रस्टी
6.	श्री नवरतनमल बच्छावत	बैंगलोर	ट्रस्टी
7.	श्री पन्नालाल बैद	नई दिल्ली	ट्रस्टी
8.	श्री राजेन्द्र प्रेमचन्द घोड़ावत	माधव नगर	ट्रस्टी

संचालिका समिति (सत्र 2010-12)

1.	श्री अशोक कुमार बैंगानी	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
2.	श्री बाबुलाल राजमल राठौड़	मुम्बई	संचालिका समिति सदस्य
3.	श्री बच्छराज नाहटा	लाडनूं	संचालिका समिति सदस्य
4.	श्री बहादुर सेठिया	बैंगलोर	संचालिका समिति सदस्य
5.	श्री भागचन्द बरड़िया	लाडनूं	संचालिका समिति सदस्य
6.	श्री भरत दूगड़	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
7.	श्री भीखमचन्द पुगलिया	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
8.	श्री भूरामल श्यामसुखा	इन्दौर	संचालिका समिति सदस्य
9.	श्री बुधसिंह सेठिया	नई दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
10.	श्री चैनरूप चिण्डालिया	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
11.	श्री डी.बी. प्रकाशचन्द जैन	चेन्नई	संचालिका समिति सदस्य
12.	श्री दामोदरलाल केवलचन्द कोठारी	अहमदाबाद	संचालिका समिति सदस्य
13.	श्री धनपतसिंह दूगड़	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
14.	श्री धर्मचन्द धाड़ेवा	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
15.	श्री फतेहलाल मेहता	मुम्बई	संचालिका समिति सदस्य
16.	श्री हंसराज बेताला	भागलपुर सिटी	संचालिका समिति सदस्य
17.	श्री हंसराज डागा	गंगाशहर	संचालिका समिति सदस्य
18.	श्री हसमुख आर. मेहता	मुम्बई	संचालिका समिति सदस्य
19.	श्री जोधराज बैद	नई दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
20.	श्री के. एल. परमार	मुम्बई	संचालिका समिति सदस्य
21.	श्री कैलाशचन्द्र जैन	नई दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
22.	श्रीमती कल्पना बैद	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
23.	श्री कन्हैयालाल डूंगरवाल	गुवाहाटी	संचालिका समिति सदस्य
24.	श्री करणीसिंह बरड़िया	सिकन्दराबाद	संचालिका समिति सदस्य
25.	श्री केवलचन्द जैन	बेलगांव	संचालिका समिति सदस्य
26.	श्री ललित कुमार सिंघी	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
27.	श्री एम. मेघराज लूणावत	चेन्नई	संचालिका समिति सदस्य
28.	श्री मनोज कुमार लूणिया	शिलौंग	संचालिका समिति सदस्य
29.	श्री मर्यादा कुमार कोठारी	जोधपुर	संचालिका समिति सदस्य
30.	श्रीमती नमिता कोठारी	नई दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
31.	श्री निर्मल कुमार डाकलिया	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
32.	श्री निर्मल कुमार कोठारी	पूणे	संचालिका समिति सदस्य
33.	श्री प्रकाश कुमार चोरड़िया	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
34.	श्री प्रमोद नाहटा	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
35.	श्री रघुवीर जैन	गुड़गांव	संचालिका समिति सदस्य
36.	श्री राजेन्द्र भूतोड़िया	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
37.	श्री राजेश सुराणा	सूरत	संचालिका समिति सदस्य
38.	श्री रमेश कोठारी	सूरत	संचालिका समिति सदस्य
39.	श्री रवीन्द्र बच्छावत	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
40.	श्री रूपचन्द दूगड़	मुम्बई	संचालिका समिति सदस्य
41.	श्री सम्पतमल नाहटा	नई दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
42.	श्रीमती संतोष चोरड़िया	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
43.	श्री शान्तिलाल मारु	उदयपुर	संचालिका समिति सदस्य
44.	श्रीमती सोनाली पटावरी (जैन)	नई दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
45.	श्री सुखराज सेठिया	दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
46.	श्री सुमेरमल डागा	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
47.	श्री सुरेन्द्र कुमार बच्छावत	कोलकाता	संचालिका समिति सदस्य
48.	श्री सुशील कुमार खटेड़	मुम्बई	संचालिका समिति सदस्य
49.	श्री स्वरूपचन्द बरड़िया	नई दिल्ली	संचालिका समिति सदस्य
50.	श्री ताराचन्द रामपुरिया	लाडनूं	संचालिका समिति सदस्य
51.	श्री विजयसिंह डागा	गुवाहाटी	संचालिका समिति सदस्य

परामर्शक मण्डल (सत्र 2010-12)

1.	श्री जसकरन चौपड़ा	सूरत
2.	श्री कन्हैयालाल पटावरी	नई दिल्ली
3.	श्री कन्हैयालाल छाजेड़	लाडनूं
4.	श्री मांगीलाल सेठिया	दिल्ली
5.	श्री रतनलाल पारख	कोलकाता
6.	श्री शार्दुलसिंह जैन	कोलकाता
7.	श्री सुमतिचन्द गोठी	मुम्बई
8.	श्री सुरिन्दर मित्तल	मंडी गोविंदगढ़
9.	श्रीमती तारादेवी सुराणा	कोलकाता

उपसमिति (सत्र 2010-12)

समण संस्कृति संकाय		
श्री रतनलाल चोपड़ा	गंगाशहर	विभागाध्यक्ष
श्री पन्नालाल पुगलिया	जयपुर	निदेशक
जीवन विज्ञान अकादमी, केन्द्रीय कार्यालय, लाडनूं		
डॉ. सूरजमल सुराणा	दिल्ली	संयोजक
श्री प्रेम सुराणा	जयपुर	संयुक्त सह-संयोजक
श्री सुरेश कोठारी	इंदौर	संयुक्त सह-संयोजक
साहित्य प्रकाशन एवं वितरण समिति		
श्री प्रेम बम्बोली	लुधियाना	संयोजक
हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग		
श्री कन्हैयालाल छाजेड़	लाडनूं	विभागाध्यक्ष
विमल विद्या विहार प्रबंधन समिति		
श्री प्रकाशचंद बैद	लाडनूं	चैयरमेन
महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल प्रबंधन समिति		
श्री रणजीतसिंह कोठारी	कोलकाता	चैयरमेन
प्रेक्षाध्यान प्रबंधन समिति		
श्री कैलाश डागा	जयपुर	संयोजक
तुलसी कला प्रेक्षा विभाग		
श्री ताराचन्द रामपुरिया	लाडनूं	विभागाध्यक्ष
वेबसाइट समिति		
श्री मानबर्धन बैद	कोलकाता	संयोजक
श्री विनय पगारिया	कोलकाता	सदस्य

महावीरन ेज ाेध र्म-दर्शनप्र ास्तुत किया,उ सेए कश ाब्दम ेंक हेंत ाेव ाहह ैस ंवर- -स ंयम।अ ात्माक ा संवरक रो,स ंयमक रो,य ाहीध र्महै ।इ सध र्मक ेस ामझकरह मअ ाज्ञाक ाप ाालनक रें।य ाहीह मारा कर्तव्य है, क्योंकि कर्तव्य आज्ञा के बिना फलित नहीं होता। जब कर्तव्य चेतना जागती है, गुरु का आदेश, हित-अहित की बात समझ में आ जाती है। कर्तव्य की चेतना को जगाने का सूत्र है – आज्ञा का जागरण। आज्ञा जागृत होगी तो धर्म समझ में आएगा, संयम और संवर की सार्थकता समझ में आएगी, 'आणाए मामगं धम्मं' इस सूक्त का रहस्य उपलब्ध हो जाएगा।

– आचार्य महाप्रज्ञ

आह्लादक शुभागमन

इस समयावधि में निम्नलिखित विशिष्ट महानुभावों का जैन विश्व भारती में शुभागमन हुआ :

1. श्री शिवराज पाटिल, *महामहिम राज्यपाल, राजस्थान एवं पंजाब*
2. मुनिश्री आर्जवसागरजी, दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागरजी के शिष्य
3. स्वामी महेश्वरानंद, *अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त योग गुरु*
4. श्री अनुभव सिंघवी, *पूर्व कांग्रेस प्रवक्ता (श्री अभिषेक मनु सिंघवी के सुपुत्र)*
5. श्री श्यामसुंदर बिस्सा, *जिला कलेक्टर, नागौर*
6. श्री राजेश निर्वाण, *पुलिस महानिरीक्षक, अजमेर रेंज*
7. श्री रविशंकर गोदारा, *गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड में नामित व्यक्ति*
8. श्री अमित भटनागर, *चीफ मैनेजर, मीड-डे-इंफोमीडिया लिमिटेड, मुम्बई (प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक समाचार-पत्र)*

जैन विश्व भारती के नये सदस्य

1.	श्री अशोक कुमार नाहटा	मंबई
2.	श्रीमती मंजू नाहटा	मुंबई
3.	श्री संदीप सेठिया	कोलकाता
4.	श्री संजय बच्छावत	कोलकाता
5.	श्री गुलाबचंद भटेरा	चैन्नई
6.	श्री नरेन्द्र कुमार भंसाली	विजयवाड़ा
7.	श्री सैन कुमार भंसाली	कोलकाता
8.	श्री कमल जैन	नई दिल्ली
9.	श्री जतन कुमार बैद	कोलकाता
10.	श्री कपूरचन्द श्रीश्रीमाल	थाणे
11.	श्री बी. जुगराज नाहर	चैन्नई
12.	श्री सुरेन्द्रसिंह भण्डारी	जयपुर
13.	श्री प्रदीप संचेती	कोलकाता
14.	श्री हंसराज डागा	रायबरेली

जैन विश्व भारती में इस समयावधि में जुड़े नए सदस्यों का हार्दिक स्वागत!

अधिशास्ता के रूप में आचार्य श्री महाश्रमण का प्रथम बार जैन विश्व भारती में पदार्पण

आचार्यम हाश्रमणक ाउ नकीस म्पूर्णध ावलस ेनाके स ाथर्ा त्रिदिवसीयप्र ावास(19-21फ रवरी2 011)ज ैन विश्व भारती परिसर में हुआ। संघीय प्रभावना, संस्थागत विकास एवं श्रद्धा भाव की दृष्टि से आचार्य प्रवर का यह प्रवास अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। लाडनूं की धरा के साथ-साथ सम्पूर्ण जैन विश्व भारती का परिसर गुरुभक्ति और गुरु सान्निध्य के रस से सराबोर रहा। इस त्रिदिवसीय प्रवास में आचार्य प्रवर के सान्निध्य में अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें अभिनंदन समारोह, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन का लोकार्पण समारोह, जीवन विज्ञान पुरस्कार समर्पण समारोह आदि विशेष उल्लेखनीय है। इस प्रवास में पूज्य प्रवर ने अपनी चरणधूलि से सम्पूर्ण जैन विश्व भारती परिसर को कृतार्थ किया।

प्राण, भूत, जीव और सत्त्वों को मत मारो, उन पर अनुशासन मत करो, उन्हें दास-दासी बनाकर अपने अधीन मत करो। उन्हें परिताप मत दो, उन्हें कष्ट मत दो, उन्हें उपद्रव मत करो, यही धर्म ध्रुव, नित्य और शाश्वत है।

भगवान महावीर

आचार्य प्रवर का अभिनंदन करते हुए
जैन विश्व भारती के मुख्य न्यासी
श्री रणजीतसिंह कोठारी एवं मंत्री श्री जितेन्द्र नाहटा

अभिनन्दन समारोह में स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए
जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया

लाडनूं को तेरापंथ की राजधानी घोषित
करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण

अभिनन्दन समारोह में प्रस्तुति देते हुए
विमल विद्या विहार के छात्र-छात्राएं

अभिनन्दन समारोह में उपस्थित विभिन्न
संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं जन समूह

ऊर्जा पाथेय लेते हुए जैन विश्व भारती की टीम

गुरु चरणों से पावन होती हुई जैन विश्व भारती की धरा

जैन विश्व भारती सचिवालय में
आचार्य महाश्रमण का पावन पदार्पण

धर्म का अर्थ है स्वभाव और वे साधन जिनसे व्यक्ति स्वयं में प्रतिष्ठित होता है। धर्म को प्राण, द्वीप, प्रतिष्ठा और गति कहा है। व्यक्ति जब धर्म को जान लेता है, उससे सम्यक् परिचित हो जाता है तब उसके लिए जो कुछ है वह सब धर्म ही है।

धर्म हमारे जीवन का वह आलोक है जो हमारी इन्द्रियों को, मन को और बुद्धि को आलोकित करता है, प्रकाश से भर देता है।

धर्म वह है जो हमारे जीवन की अन्धकारमय संस्कारों की परतों को प्रकाशमय बनाता है।

धर्म वह है जो इन्द्रियों को, बुद्धि को और मन को निर्मल बनाता है।

धर्म वह है जो इन्द्रिय, बुद्धि और मन को शक्तिशाली बनाता है।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन का लोकार्पण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के सहयोग से तीन खण्डों
में नवनिर्मित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन का लोकार्पण करते हुए श्री राजेन्द्र बच्छावत एवं
आचार्य महाप्रज्ञ केन्द्रीय शैशणिक भवन का लोकार्पण करते हुए श्रीमती मंगली देवी दुधेड़िया।
जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में दिनांक 20 फरवरी को मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा अनुदानस्वरूप प्रदत्त भूमि पर जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अन्तर्गत निर्मित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन, आचार्य तुलसी महिला शिक्षा केन्द्र एवं आचार्य महाप्रज्ञ केन्द्रीय शिक्षण भवन का लोकार्पण हुआ। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से निर्मित इन तीनों भवनों का लोकार्पण क्रमशः श्री राजेन्द्र बच्छावत, श्रीमती कुमुद-नवरत्नमल बच्छावत एवं श्रीमती मंगली देवी दुधेड़िया ने किया। लोकार्पण समारोह के अवसर पर आचार्यप्रवर ने भवनों के साथ तीन आचार्यों के नाम जुड़े होने की बात को विशिष्ट बताते हुए यहां के विद्यार्थियों को भौतिक विद्या के साथ-साथ अध्यात्म विद्या ग्रहण कर सर्वांगीण विकास का पाथेय प्रदान किया। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की भावी योजनाओं को प्रस्तुत किया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने महासभा को अपने दायित्वों के प्रति सजग बताते हुए निर्मित भवनों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने महासभा को महाविद्यालय के प्रोजेक्ट को निर्धारित समयावधि में पूरा करने एवं समाज द्वारा विसर्जन में सहयोग देने पर आभार ज्ञापित किया।

इस अवसर पर भवन निर्माण में सहयोगी बनने वाले भामाशाहों और दानदाताओं का तेरापंथी महासभा और जैन विश्व भारती की ओर से सम्मान किया गया।

लोकार्पण समारोह की झलकियां

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का छठा दीक्षान्त समारोह

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का छठा दीक्षान्त समारोह विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य एवं पंजाब तथा राजस्थान राज्य के राज्यपाल डॉ. शिवराज पाटिल के मुख्य आतिथ्य में सुधर्मा सभा के प्रांगण में दिनांक 21 फरवरी 2011 को आयोजित हुआ। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति लालचंद सिंघी की अध्यक्षता में आयोजित दीक्षान्त समारोह में दीक्षान्त भाषण देते हुए डॉ. शिवराज पाटिल ने कहा कि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय एक अनोखा विश्वविद्यालय है जहां अन्य विषयों के साथ-साथ अध्यात्म एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान की जाती है। दीक्षांत समारोह के प्रारम्भ में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने विश्वविद्यालय का परिचय प्रस्तुत करते हुए आगन्तुकों का स्वागत किया। कुलाधिपति लालचंद सिंघी ने उपाधिधारकों को अहिंसक, प्रामाणिक, व्यसनमुक्त जीवन जीते हुए देशभक्त नागरिक बनने का संकल्प ग्रहण करवाया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से राज्यसभा सदस्य एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी को डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि प्रदान की गई। दीक्षान्त समारोह में विश्वविद्यालय के 26 शोधार्थियों को पीएच.डी., 35 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक एवं 1821 विद्यार्थियों को स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधि विभागाध्यक्षों की घोषणा पर कुलपति महोदया द्वारा प्रदान की गई।

दीक्षांत समारोह की झलकियां

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय : विजन 2020

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की भावी संभावनाओं पर चिंतन और क्रियान्विति की दिशा में एक प्रयास मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा कोलकाता के आई-लिड संस्थान में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय : विजन 2020 के रूप में किया गया। विश्वविद्यालय की वर्तमान स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए उज्ज्वल भविष्य के संबंध में योजना निर्माण एवं क्रियान्वयन के लिए यह द्विदिवसीय संगोष्ठी महत्वपूर्ण रही। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया एवं आइ-लिड के निदेशक श्री प्रदीप चौपड़ा के संयुक्त प्रयासों से आयोजित इस संगोष्ठी में विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने विश्वविद्यालय की भावी संभावनाओं के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। दो दिन के गहन विचार-मंथन के पश्चात यह चिंतन उभर कर आया कि विश्वविद्यालय के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है कि नवीन शिक्षण तकनीकों, यथा स्मार्ट क्लास, इ-लर्निंग, ऑन-लाइन लर्निंग,ि डस्टेंसल र्निंगप्र ोग्राम,इ अ रत थाअ ाधुनिकप ाठ्यक्रमोंक ो ज ोड़ाज ाए ।य हर्नि नर्णयर्लि लयाग याकि मातृ संस्था के सहयोग से विभिन्न समितियों का गठन करके विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, प्रशासनिक गतिविधियों को समुचित एवं समायनुकूल बनाया जाए। इस संगोष्ठी में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य समणी मल्लीप्रज्ञाजी आदि समणीवृंद का सान्निध्य एवं दिशा-निर्देशन प्राप्त हुआ। संगोष्ठी में मुख्य रूप से प्रदीप चौपड़ा, दीपाली सिंघी, अनिमेष विश्वास, दिव्या कनाल, देवादित्य चक्रवर्ती, यासनून अली, संदीप नौलखा, चंद्रमणी सिंह, शांतिलाल बरमेचा आदि ने अपनी प्रस्तुति दी। जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण, विश्वविद्यालय प्रबंध मण्डल एवं विभिन्न समितियों में जैन विश्व भारती द्वारा मनोनीत सदस्यों सहित अनेक शिक्षाविदों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

जीवन विज्ञान पुरस्कार समारोह

नाहटा चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित एवं जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान पुरस्कार इस वर्ष कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी, बैंगलोर को प्रदान किया गया। आचार्य महाश्रमण के लाडनूं प्रवास के दौरान दिनांक 20 फरवरी 2010 को सुधर्मा सभा में आयोजित एक समारोह में कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी, बैंगलोर को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये की राशि का चेक, प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट किया गया। कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के मंत्री श्री ललित जैन ने अकादमी द्वारा संचालित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की जानकारी प्रदान की।

विद्युत चुम्बक चिकित्सा केन्द्र का शुभारंभ

जैन विश्व भारती के परिसर स्थित आरोग्यम् भवन में दिनांक 20 फरवरी 2011 को विद्युत चुम्बक चिकित्सा केन्द्र का प्रारंभ आचार्य महाश्रमण के मंगल पाठ के साथ हुआ। इस चिकित्सा पद्धति में विभिन्न रोगों का उपचार विद्युत एवं स्थायी चुम्बकीय तरंगों द्वारा किया जाता है। यह चिकित्सा पद्धति बहुत ही सरल है तथा इसमें मरीज को कोई कष्ट नहीं होता है। इस चिकित्सा केन्द्र का समय रविवार एवं अन्य अवकाश के दिनों को छोड़कर प्रतिदिन प्रात: 7.00 से 1.00 बजे एवं अपराह्न 3.00 से 6.00 बजे तक है। 20 फरवरी, 2011 से प्रारंभ हुए इस उपक्रम में 31 मार्च, 2011 तक 119 रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया तथा प्रतिदिन रोगी के हिसाब से यह संख्या 1190 रही।

नेपाल-बिहार भवन का निर्माण

आचार्य महाप्रज्ञ के सन् 2009 में जैन विश्व भारती, लाडनूं चातुर्मास के दौरान परिसर में निर्मित जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत नेपाल-बिहार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा की प्रेरणा से 16फ लैटोंके ए कब लॉकक ा न ामकरणअ ाचार्यम हाश्रमणके लाडनूं पादार्पण के अवसर पर दिनांक 20 अप्रैल 2011 को नेपाल-बिहार भवन के रूप में किया गया। इस अवसर पर पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में नेपाल-बिहार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बैताला को जैन विश्व भारती द्वारा मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। जैन विश्व भारती द्वारा सभी अनुदानदाताओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार ज्ञापित किया गया।

जैन विश्व भारती की निर्माणाधीन योजनाएं

जीवन विज्ञान इंटरनेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, लाडनूं

उद्देश्य :
अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जीवन-विज्ञान का प्रचार-प्रसार एवं शोध

आर्किटेक्ट :
श्री सुरेश जैन, एस. बी. कन्सलटेन्ट, बैंगलोर

कॉन्ट्रेक्टर :
श्री सुरेन्द्र मेहता, भुवाल कन्स्ट्रक्शन, जोधपुर

प्रस्तावित निर्माण क्षेत्र :
60,000 स्क्वायर फिट

अनुमानित लागत :
लगभग 6 करोड़ रु.

कार्य सम्पन्नता का अनुमानित लक्ष्य :
दिसम्बर 2012

वर्ष 1
अंक 1
जनवरी-मार्च
2011

अभ्युत्थानम् पर्व-पर्व

आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर, लाडनूं

उद्देश्य :
राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रेक्षाध्यान का विकास, विस्तार एवं संवर्धन

आर्किटेक्ट :
श्री सौमेन्दास बैरागी, कोलकाता

स्ट्रक्चरल इंजीनियर :
श्री संजीव पारीक, कोलकता

कॉन्ट्रेक्टर :
श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर

प्रस्तावित निर्माण क्षेत्र :
21,000 स्क्वायर फिट

अनुमानित लागत :
लगभग 3 करोड़ रु.

कार्य सम्पन्नता का अनुमानित लक्ष्य :
दिसम्बर 2011

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर

उद्देश्य :
ग्रामीण क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक सुविधाओं एवं शैक्षिक परिवेश का विकास

आर्किटेक्ट :
श्री कमल पेरिवाल, कोलकाता

स्ट्रक्चरल इंजीनियर :
श्री गोराचंद मण्डल, कोलकाता

कॉन्ट्रेक्टर :
श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर

प्रस्तावित निर्माण क्षेत्र :
80,000 स्क्वायर फिट

अनुमानित लागत :
लगभग 7 करोड़ रु.

कार्य सम्पन्नता का अनुमानित लक्ष्य :
मार्च 2012

राष्ट्रीय पुस्तक मेला, जयपुर में आचार्य महाप्रज्ञ बुक स्टॉल

राजस्थान पत्रिका समूह द्वारा जयपुर के एस.एम.एस. ग्राउण्ड में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले में जैन विश्व भारती द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ बुक स्टॉल के नाम से साहित्य का स्टॉल लगाया गया। तक चले इस पुस्तक मेले का उद्घाटन राजस्थान के शिक्षा मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल ने किया। शिक्षा मंत्री ने आचार्य महाप्रज्ञ की रचनाओं को साहित्य जगत के लिए वरदान बताते हुए उनके द्वारा प्रणीत जीवन विज्ञान की शिक्षा पद्धति की महत्ता प्रकाश डाला। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने जैन विश्व भारती की गतिविधियों एवं आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य के बारे में शिक्षा मंत्री को जानकारी देते हुए तेयुप के संगठन मंत्री श्री अविनाश नाहर, अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष श्री जी. एल. नाहर आदि के साथ मिलकर आचार्य महाप्रज्ञ की आत्मकथा का पहला खण्ड 'यात्रा : एक अकिंचन की' पुस्तक अनावरण हेतु शिक्षा मंत्री को भेंट की। स्टॉल पर आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकें 'कैसे सोचें', 'चित्त और मन', 'जो सहता है वही रहता है', 'ध्यान क्यों', 'परिवार के साथ कैसे रहें', 'मंत्र : एक समाधान' आदि पुस्तकों की विशेष मांग रही। मेले की विभिन्न व्यवस्थाओं के नियोजन में तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर एवं जैन विश्व भारती के साहित्य विभाग के श्री जगदीश प्रसाद एवं श्री अमीलाल चाहर का विशेष सहयोग रहा।

साहित्य से सम्मान

इन्फोसिस समूह के संस्थापक चेयरमैन व अक्षय पात्र फाउण्डेशन के मानद सलाहकार श्री एन. आर. नारायणमूर्ति को कोलकाता प्रवास के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य भेंट करते हुए जैन विशव भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया व मुख्य ट्रस्टी श्री रणजीत सिंह कोठारी।

कोलकाता पुस्तक मेले में जैन विश्व भारती की प्रथम बार प्रतिभागिता

कोलकाता के मिलन मेला ग्राउण्ड में आयोजित दस दिवसीय (26 जनवरी से 6 फरवरी 2011) पुस्तक मेले में जैन विश्व भारती द्वारा साहित्य का स्टॉल लगाया गया। इस मेले में संघीय साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न प्रयास किए गए। दस दिवसीय मेले के दौरान जैन विश्व भारती की ओर से पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें समणी विनयप्रज्ञाजी एवं समणी शुक्लप्रज्ञाजी ने तेरापंथ धर्मसंघ से संबंधित विविध जानकारी प्रेस एवं मीडिया को दी। इस अवसर पर स्थानीय समाचार-पत्रों एवं टी.वी. चैनलों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित थे। संघीय प्रभावना की दृष्टि से पुस्तक मेले में सहभागिता काफी महत्वपूर्ण रही।

लघु कथा

दिमाग पश्चिम की ओर है

रोगी डॉक्टर के पास गया, बोला – दिल और दिमाग में दर्द है। डॉक्टर ने उसे उलटा लिटाकर पीठ देखना शुरू किया। रोगी बोला – पीठ में नहीं, दिल में दर्द है। डॉक्टर ने कहा - अब भारतीय लोगों का दिल सामने कहा है? उनका दिल और दिमाग पश्चिम की ओर है, पीछे है।

प्रकाशित पुस्तकें

विगत तीन माह में जैन विश्व भारती द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गई

1.	प्रकृति विहार	आचार्य महाप्रज्ञ	1100प्रतियां
2.	गाथा परम विजय की	आचार्य महाप्रज्ञ	3000 ,,
3.	जो सहता है वही रहता है (द्वितीय संस्करण)	आचार्य महाप्रज्ञ	2200 ,,
4.	प्रेक्षाध्यान : दर्शन और प्रयोग	आचार्य महाप्रज्ञ	1100 ,,
5.	संवाद भगवान से (भाग-1)	आचार्य महाश्रमण	2200 ,,
6.	संवाद भगवान से (भाग-2)	आचार्य महाश्रमण	1100 ,,
7.	दुःख मुक्ति का मार्ग	आचार्य महाश्रमण	1100 ,,
8.	क्या कहता है जैन वाङ्मय	आचार्य महाश्रमण	1100 ,,
9.	आचार्य महाश्रमण : जीवन परिचय	साध्वी सुमतिप्रभा	1100 ,,
10.	आर्य स्थूलभद्र और कोशा	मुनि दुलहराज	1100 ,,
11.	वीर विक्रमादित्य	मुनि दुलहराज	1100 ,,
12.	अलबेली आम्रपाली	मुनि दुलहराज	1100
13.	नल दमयंती	मुनि दुलहराज	550
14.	वैर का अनुबंध	मुनि दुलहराज	550
15.	मन के दीप	मुनि बुद्धमल	500 ,,
16.	उस पार	मुनि बुद्धमल	1100 ,,
17.	नमस्कार महामंत्र की प्रभावक कथाएं	मुनि किशनलाल	1100 ,,
18.	सात कौड़ियों से राज्य	मुनि धनंजय कुमार	1100 ,,
19.	रहस्य भिक्षु के	मुनि रजनीश कुमार	1100
20.	साध्वाचार के सूत्र	मुनि रजनीश कुमार	550
21.	आचार्य भिक्षु और सुकरात की समानताएं	साध्वी कल्पमाला	1100 ,,
22.	आपके हाथों में है सफलता की चाबी	मुनि गिरीश कुमार	1100 ,,
23.	आचार्य तुलसी चित्रकथा (अंग्रेजी)	मुनि विजयकुमार	3000 ,,
24.	महामंत्र की परिक्रमा	डॉ. साध्वी लावण्ययशा	500 ,,
25.	सम, श्रम एवं शम की साधिका : साध्वी सिरेकुमारी	साध्वी हर्षकुमारी	500 ,,

अर्थ और काम से सुख नहीं होता, क्योंकि वे संसार को बढ़ाने वाले हैं। जो धर्म सावद्य की उत्पत्ति करता है, उस धर्म से भी सुख नहीं होता। प्रधान सुख उससे होता है, जो निःसावद्य धर्म है।

– आचार्य जिनसेन

इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा का स्वरूप

आचार्य महाप्रज्ञ

सर्वांगीण विकास के लिए सर्वांगीण शिक्षा की आवश्यकता है। उसमें पदार्थ विकास और चेतना का विकास-दोनों का प्रशिक्षण देना आवश्यक है। यह पद्धति जीवन का विज्ञान अथवा जीने की कला है। शिक्षा का कार्य विद्यार्थी को केवल बौद्धिक और कर्मकुशल बनाना ही नहीं है, अपितु उसे समाज के लिए उपयोगी बनाना भी है। वैयक्तिक सुख-सुविधा और धन संग्रह को सर्वस्व मानने वाला व्यक्ति समाज के लिए उपयोगी नहीं हो सकता।

त्याग, संयम और स्वार्थ के समीकरण के बिना कोई भी व्यक्ति निर्मल और उपयोगी नहीं बनता। वर्तमान शिक्षा मुख्य रूप से गतिशीलता की शिक्षा है। मूल्य-परक शिक्षा निर्मलता और उपयोगिता की शिक्षा है। दोनों अलग-अलग रहें तो समग्र व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकता। उनके समन्वय की अपेक्षा है।

व्यक्तित्व का रूपान्तरण अथवा चरित्र का विकास केवल बौद्धिक शिक्षा से संभव नहीं है। बौद्धिक विकास और मानसिक विकास एक नहीं है। बौद्धिक विकास बढ़े, स्मृति, कल्पना और चिन्तनात्मक मानसिक विकास बढ़े, इस दिशा में शिक्षा को सक्रिय होना है। मानसिक विकास का एक दूसरा पहलू और है। धृति, सहिष्णुता और मनोबल की वृद्धि होना, यह मानसिक पक्ष शिक्षा के क्षेत्र में उपेक्षित है। इसलिए शिक्षा असंतुलित व्यक्तित्व का निर्माण कर रही है। शिक्षा जगत में चेतना और मस्तिष्क विद्या की उपेक्षा हुई है इसलिए व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बात उसमें नहीं जुड़ पाई।

शिक्षा का काम है – विद्यार्थी में अनुकूल और प्रतिकूल – दोनों प्रकार की परिस्थितियों को झेलने की क्षमता पैदा करना। वर्तमान शिक्षा बौद्धिकता के विभिन्न पक्षों को विकसित करने में सफल रही है। आज का शिक्षित व्यक्ति चिन्तन के क्षेत्र में पीछे नहीं है। कार्मिक दक्षता के क्षेत्र में वह बहुत आगे है। जीविकोपार्जन के नए-नए आयाम खोलने में उसने गति की है। बहुत सारे विद्यालय विद्यार्थी को अनुशासित करने में भी सफल हुए हैं। इस सफलता की पृष्ठभूमि में आंतरिक योग्यता और बाहरी वातावरण दोनों का योग मिला है। इतना होने पर भी जो कुछ शेष है उस पर शिक्षा-जगत का ध्यान आकर्षित होना चाहिए। व्यक्ति की मानसिक शांति और सामाजिक सुव्यवस्था आंतरिक और बाहरी परिष्कार से ही संभव हो सकती है।

शिक्षा का उद्देश्य अच्छे वातावरण में रखकर विद्यार्थी को अच्छा बनाया जाये, इतना ही नहीं होना चाहिए। उसका उद्देश्य होना चाहिए संस्कार-बीज का परिष्कार। भय, अहंकार, क्रोध, लोभ, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और वासना के संस्कार-बीज प्रत्येक बच्चे में होते हैं। उसे जीविकोपयोगी विद्या के साथ वह विद्या भी पढ़ाई जाए, जिससे वह अपने संस्कारों का परिष्कार करता रहे।

संस्कार का संबंध पूर्वजन्म के साथ है। एक बच्चा पूर्वजन्म से अपने साथ संस्कार-बीज लेकर आता है। शिक्षा प्रणाली में पूर्वजन्म का सिद्धान्त सबको मान्य हो, यह अनिवार्य नहीं। पूर्वजन्म और पुनर्जन्म का प्रश्न दर्शन और धर्म के क्षेत्र का प्रश्न है। क्या यह शिक्षा के क्षेत्र का प्रश्न नहीं है? सहज ही यह चिन्तन स्फुरित हो सकता है कि शिक्षा पर विचार करते समय हमें इस प्रश्न की गहराई में जाना चाहिए। यह प्रश्न दर्शन, काव्यानुशासन, मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान और आनुवंशिकी सबके परिप्रेक्ष्य में आलोचनीय है।

दर्शन की दो धाराएं हैं। एक धारा में पुनर्जन्म मान्य है। दूसरी धारा में वह मान्य नहीं है। दार्शनिक दृष्टि से दोनों धाराओं की शिक्षा का आधार भिन्न है, फिर भी एक बिंदु पर दोनों एक आसन पर बैठ जाते हैं। वह बिंदु है नैतिकता। सामाजिक जीवन में नैतिकता का मूल्य सबके लिए है। समाज-जीवन के तीन आधार-स्तम्भ हैं – पारस्परिकता, नैतिकता और मानवीय संबंध। शिक्षा के द्वारा ये फलित होने चाहिए। फल मूल के अनुरूप ही होता है। विद्यार्थी को जीने की कला सिखाई जाए, शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्वास्थ्य का बोध कराया जाए तो नैतिकता के प्रति सहज आकर्षण उत्पन्न हो सकता है।

अर्थ के अति आकर्षण ने नैतिकता के दृष्टिकोण को धूमिल बना दिया है। व्यापार, उद्योग, शासन और

प्रशासन – इन सब में नैतिक मूल्यों की अवहेलना हो रही है। सुविधा के साधनों की स्पर्धा, गरीबी, महंगाई और अनैतिकता के पनपने के लिए उर्वर भूमि बनी हुई है। यह वास्तविकता एक पहलू है। इसका दूसरा पहलू यह है कि विद्यार्थी को प्रारम्भ से ही नैतिक मूल्यों तथा उनके लाभालाभ से परिचित नहीं कराया जाता।

विश्वविद्यालय के प्रांगण में यत्र-तत्र मूल्यपरक शिक्षा का स्वर सुनाई दे रहा है। यह नैतिकता की शिक्षा का नया संस्कार है। यह स्वर बौद्धिक शिक्षा की अपर्याप्तता से उपजा हुआ है। जीवन-रथ को केवल बौद्धिकता के चक्र पर नहीं चलाया जा सकता। उसको गतिमान बनाने के लिए नियंत्रण का चक्र भी आवश्यक है। मानसिक आकांक्षाओं, इन्द्रियों की उच्छृंखल मांगों और मानसिक विक्षेपों पर नियंत्रण करने की विधि सीखे बिना विद्यार्थी मानसिक अनुशासन और मानसिक शान्ति के उपयुक्त नहीं बनता।

अर्थार्जन के प्रति आकर्षण इसलिए है कि उसका फल प्रत्यक्ष है। नैतिकता, आर्थिक पवित्रता और सदाचार के प्रति आकर्षण इसलिए नहीं है कि इनका फल प्रत्यक्ष नहीं है। इनका जो फल मिलता है वह भी परोक्ष जैसा ही है, इसलिए उनके प्रति निष्ठा पैदा करने का कार्य अपेक्षाकृत सरल है। आयु की परिपक्वता, व्यावसायिक स्पर्धा और सुविधा की उत्कृष्ट लालसा होने पर निष्ठा का निर्माण जटिल होता है। विद्यार्थी जीवन में आयु की अपरिपक्वता होती है, व्यावसायिक स्पर्धा में वह उतरता नहीं है और सुविधा के साधनों के प्रति भी प्रबल मनोभाव नहीं बनता इसलिए उसमें नए संस्कार का निर्माण करना बहुत जटिल नहीं होता।

शिक्षा का कार्य है अच्छे संस्कार का निर्माण, अच्छी आदतों का निर्माण और अच्छे चरित्र का निर्माण। केवल जीविकोपयोगी शिक्षा के द्वारा वह संभव नहीं है। अनुशासनहीनता और चारित्रिक ह्रास की अनुभूति समाज को हो रही है, उसका हेतु केवल जीविकोपयोगी शिक्षा है। विद्यार्थी का मस्तिष्क अर्थार्जन तथा सुविधा के साधनों की प्रचुरता की शिक्षा से ही शिक्षित होगा, उसमें चरित्र और नैतिकता का कोष्ठ सुषुप्त ही रह जाएगा।

नई पीढ़ी का निर्माण करने के लिए नई दिशा की खोज और नए जीवन-दर्शन की व्याख्या करनी होगी। नई दिशा का सूत्र होगा - भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का संतुलन। नए मनुष्य के जन्म का सूत्र होगा - आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्यक्तित्व का जन्म। केवल भौतिकता की दिशा में चलने का परिणाम है नैतिकता का ह्रास, मानवीय संबंधों में कटुता, संघर्षमय और संहारक शस्त्रों का निर्माण। इस स्थिति को एक नई दिशा का निर्माण करके ही बदला जा सकता है। केवल आध्यात्मिकता से जीवन के लिए उपयोगी साधन-सामग्री नहीं जुटाई जा सकती। केवल भौतिकता से जीवन अच्छा नहीं चलता। अतः सामाजिक मनुष्य के लिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों में संतुलन स्थापित करना अपेक्षित है।

वैज्ञानिक शोधों ने अनेक-अनेक अंधविश्वासों को दूर किया है। अब धर्म और अध्यात्म को भी वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना जरूरी है। धर्म और अध्यात्म का पहला सूत्र है – सम्यक दृष्टिकोण। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का हृदय है – सत्य की खोज निरंतर चालू रहे, खोज का दरवाजा बन्द न हो। सम्यक दृष्टिकोण का मर्म भी यही है। धर्म का दूसरा सूत्र है – सम्यक आचरण। यह भौतिक-विज्ञान का विषय नहीं है। केवल सत्य की खोज का दृष्टिकोण जीवन विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके लिए सम्यक आचरण का पक्ष बहुत जरूरी है। आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का अर्थ होगा – वह व्यक्ति जिसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक है, सत्य की खोज के लिए समर्पित है और जिसका आचरण आध्यात्मिक है। ये दोनों पक्ष व्यक्तित्व को सर्वांगीण बनाते हैं। केवल आध्यात्मिक और केवल वैज्ञानिक – इस विभाजन ने अनेक समस्याएं उत्पन्न की हैं। केवल आध्यात्मिक है और दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं है, उसमें रूढ़िवाद, अंधविश्वास आदि पनप जाते हैं। केवल वैज्ञानिक है, आध्यात्मिक नहीं है, उसमें मानसिक संतुलन, असंतोष, पदार्थाभिमुखता आदि पनप जाते हैं। नई पीढ़ी में यह विभाजन रेखा समाप्त होनी चाहिए। एक ही व्यक्ति आध्यात्मिक और वैज्ञानिक होना चाहिए।

नई पीढ़ी के निर्माण का तात्पर्य है – इन अवधारणाओं से युक्त मनुष्य और समाज का निर्माण। इसका साधन होगा - समन्वयवादी दृष्टिकोण, अपने भीतर झांकने का उपक्रम, अहिंसा का प्रशिक्षण, मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास, अणुव्रत की आचार-संहिता का अनुशीलन और अभ्यास, सहिष्णुता, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा की अनुप्रेक्षाओं के प्रयोग। यह प्रयत्न स्वस्थ समाज रचना और स्वस्थ व्यक्ति निर्माण की दिशा में एक साथ चले तो नई पीढ़ी के निर्माण की कल्पना साकार हो सकती है।

(आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक 'कैसी हो इक्कीसवीं शताब्दी' में शिक्षा शीर्षक लेख के आधार पर)

विश्व पटल पर जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती के नाम से विदेशों में संचालित केन्द्रों के कार्यक्रमों की झलकियाँ

फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में अध्यापन करवाते हुए डॉ. समणी चैतन्यप्रज्ञाजी

ह्यूस्टन सेन्टर पर समणी निर्देशिका अक्षयप्रज्ञाजी एवं समणी परिमलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में संचालित प्रेक्षाध्यान एवं योग संबंधी कार्यक्रम

ओरलैंडो सेन्टर में जैन दर्शन पर उद्बोधन देती हुई समणी भावितप्रज्ञा जी एवं समणी विशदप्रज्ञा जी

शिक्षा पर अंकित शिलालेख

मेरी कर्मस्थली : जैन विश्व भारती

डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञा

शिक्षा, साधना और अध्यात्म आदि सात सकारों की संगमस्थली जैन विश्व भारती आज जन-जन के लिए आकर्षण का केन्द्र बन चुकी है। आचार्य तुलसी के मुख से निःसृत कामधेनु शब्द आज चरितार्थ होता हुआ प्रतीत हो रहा है। इस संस्थान से समाज, देश और विश्व को बहुत आशाएं हैं।

मैं तेरह वर्ष की अल्प अवस्था में पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रविष्ट हुई। सन् 1980 में इक्कीस वर्ष की अवस्था में समणश्रेणी की प्रथम पंक्ति में विलक्षण दीक्षा के रूप में जैन विश्व भारती के सुरम्य प्रांगण में हम छः बहिनों की दीक्षा हुई। दीक्षा से पूर्व ही मुझे पूज्यवरों ने आगम के कार्य में नियुक्त कर दिया था। गुरु कृपा से पिछले बत्तीस सालों से कोश एवं आगम व्याख्या-साहित्य के कार्य में संलग्न हूं। आचार्य तुलसी एवं उनके साहित्य पर कार्य करना मेरी अभिरुचि का विषय था। आचार्य तुलसी को जब कभी ज्ञात होता कि मैं उनके साहित्य पर काम कर रही हूं तो वे तत्काल प्रतिबंध लगाते हुए कहते थे - 'देखो, भाग्यशाली को ही यह आगम का कार्य मिलता है। इस कार्य से तुम्हारा इतिहास बनेगा और धर्मसंघ की अपूर्व सेवा होगी, अतः स्थिरचित्त होकर यह कार्य करो।

बचपन में मुझे देशाटन का बहुत शौक था। जब कभी मैं लाडनूं से बाहर यात्रा में जाने का निवेदन करती तो गुरुदेव फरमाते – "जैन विश्व भारती में रहना सौभाग्य की बात है। आज तुमको यह बात समझ नहीं आ रही है फिर हमको याद करोगी।" लगता है आचार्य तुलसी की यह वाणी आज अक्षरशः सत्य प्रतीत हो रही है। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी अनेक बार फरमाती हैं – "समणी कुसुमप्रज्ञाजी कहीं भी चली जाएं लेकिन इनको सपने तो जैन विश्व भारती के ही आते हैं।"

पूज्यवरों ने कार्य के लिए न केवल आशीर्वाद दिया अपितु समुचित व्यवस्थाएं भी प्रदान कीं। मार्गदर्शन हेतु मुनि श्री दुलहराजजी को निर्देश दिया तथा कार्य में सहयोग हेतु कुछ बहिनों के लिए इंगित किया। तत्कालीन मंत्री श्रीचंदजी बैंगानी ने उदार हृदय से कार्य करने वाली बहिनों की नियुक्ति की। सन् 1983 में सर्वप्रथम एकार्थक कोश प्रकाशित हुआ। पिछले अट्ठाईस सालों में कोश एवं व्याख्या-साहित्य के लगभग 5300 पृष्ठ प्रकाशित हो गए हैं। लगभग 5550 पृष्ठ भविष्य में प्रकाशित हों, इतना कार्य हो चुका है। यह सब गुरुकृपा, संघ की शक्ति और बुजुर्गों के आशीर्वाद से ही संभव हो सका है। मैं अपना सौभाग्य मानती हूं कि दीक्षित होते ही मुझे नंदनवन के समान जैन विश्व भारती में रहने का सौभाग्य मिला। यहां के अणु-अणु में आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के कर्तृत्व की अनुगूंज सुनाई देती है। जैन विश्व भारती के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मुझे हार्दिक सहयोग मिलता रहता है। मेरी चिर अभीप्सा है कि आचार्य महाश्रमण की छत्रछाया में धर्मसंघ की प्रभावना के लिए मैं जीवन की अंतिम सांस तक कार्य करती रहूं।

जैन विश्व भारती में प्रेक्षाध्यान का अनोखा उपक्रम

प्रो. बाबूलाल नाहटा
प्रोफेसर ऑफ इकॉनोमिक्स अमेरिका

22 दिसम्बर, 2009 को मैंने आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी के दर्शन श्रीडूंगरगढ़ में किए। पिछले अनेक वर्षों से मेरे मस्तिष्क में एक ज्वलंत प्रश्न था, जिसका मैं समाधान खोजना चाहता था। आत्म शान्ति, आत्म साक्षात्कार व अन्तिम शान्ति क्या है? मैं यह प्रश्न आचार्य महाप्रज्ञजी के सम्मुख रखा।

उनका उत्तर बहुत ही सरल था कि मुझे सर्वप्रथम अपने शरीर को समझना चाहिए, शेष अपने आप समझ में आता जाएगा। उन्होंने प्रेक्षाध्यान के लिए मुझे लाडनूं आने के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी प्रेरणा से ही मैंने 19 फरवरी 2011 से इक्कीस दिनों के प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लिया। श्री जीतमलजी गुलगुलिया के निर्देशन में यह शिविर प्रारम्भ हुआ। प्रेक्षाध्यान से मैंने अपने जीवन में अद्भुत परिवर्तन का अनुभव किया है। मुझे ध्यान से अनेक अनुभूतियां हुईं जिनका शब्दों में वर्णन मैं नहीं कर सकता, लेकिन उसने मेरे आत्म साक्षात्कार के मार्ग को सुलभ कर दिया है। मैं अपने शेष जीवन में इसे लगातार जारी रखना चाहता हूं जिससे मेरे अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हो सके।

शान्ति और अध्यात्म शक्ति के विकास के लिए यह स्थान अपने आप में अनोखा व अद्भुत है। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे ऐसा स्थान सुलभ हुआ है।

विगत 35 वर्षों से अध्यापन कार्य करते हुए पूरे विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों और 90 से भी अधिक देशों की यात्राओं के पश्चात मैं यह कह सकता हूं कि इससे अच्छा स्थान और कहीं नहीं है।

प्रेक्षाध्यान के लाभों के बारे में सम्पूर्ण विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए, यह मेरा सुझाव है। इस पद्धति के बारे में अभी भी लोगों को पूर्ण जानकारी का अभाव है। मेरा विश्वास है कि इन्टरनेट के माध्यम से इसे सुलभ कराया जाना चाहिए।

आज एक ध्यान पद्धति का उदाहरण दूंगा जो सभी देशों में आसानी से प्रयोग में लाई जा रही है वह है "विपस्यना" ध्यान पद्धति।

प्रेक्षाध्यान के लिए एक सही प्रयास करके इसके लाभों को अनेक लोगों तक पहुंचाया जा सकता है।

मैं श्री जीतमलजी व जैन विश्व भारती का अत्यन्त आभारी हूं जिन्होंने मुझे प्रेक्षाध्यान सीखने का मौका प्रदान किया है। मैं किसी भी रूप में अपनी सेवाएं देने के लिए सहर्ष स्वीकृति देता हूं।

जैन विश्व भारती : एक सुरम्य परिवेश

डॉ. रेचल, न्यूजीलैंड

(जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक सौन्दर्य, नैसर्गिक परिवेश एवं सुरम्य परिसर ने अपनी स्थापना काल से ही देशी-विदेशी साधकों, पर्यटकों और सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित किया है। विगत कई वर्षों से देश के कोने-कोने से एवं विदेश के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक साधकों, पर्यटकों का जैन विश्व भारती में भ्रमण, साधना एवं आत्मानुभूति के लिए निरन्तर आवागमन होता रहता है। साधकों और पर्यटकों के ऐसे प्रवास संस्था की प्रभावना में श्रीवृद्धि करते हैं। प्रस्तुत है हाल ही में जैन विश्व भारती में न्यूजीलैण्ड से आयी डॉ. रेचल और उनके पति के अनुभव)

लगभग पिछले सात सप्ताह से जैन विद्या के अध्ययन के उद्देश्य से हम जैन विश्व भारती परिसर में रह रहे हैं। यहां का परिसर सुंदर है तथा वातावरण अत्यंत शांतिप्रिय है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय ने हमें यह सुअवसर प्रदान किया है।

जैन विश्व भारती के परिसर तथा यहां के लोगों के आतिथ्य से हम अभिभूत हैं। अपने इस प्रवास के दौरान अतिथि भवन, पुस्तकालय और कार्यालयों से हमें जो सुविधा और सहयोग प्राप्त हुआ है वह वास्तव में आनन्ददायी रहा है। यहां प्रेक्षाध्यान करके हमें आंतरिक शांति मिलती है, जो आज के समय में दुर्लभ है।

यह परिसर नैसर्गिक सौंदर्य से भरा है। सुबह और शाम के समय परिसर में भ्रमण के दौरान यहां के लोगों के आत्मीय व्यवहार से मन रोमांचित हो उठता है। जैन दर्शन के अध्ययन के लिए हमें पुस्तकालय से जो जानकारियाँ और स्रोत साहित्य उपलब्ध हुए हैं, वे अत्यंत मूल्यवान और महत्वपूर्ण हैं। जैन विश्व भारती परिसर में हमारा प्रवास अनेक दृष्टियों से अविस्मरणीय रहा है।"

वर्ष 1
अंक 1
जनवरी-मार्च
2011

ऊर्जादायी केन्द्र

कुसुमलता सुराना

(आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु 'जैन विश्व भारती' एक ऊर्जादायी केन्द्र के रूप में भी स्थापित हुई है। विभिन्न पारिवारिक, व्यक्तिगत आदि परिस्थितियों से व्यथित एवं पीड़ित हुए अनेक व्यक्तियों में इस संस्थान ने नवीन ऊर्जा का संचरण कर उनके जीवन को एक नवीन दिशा दी है। प्रस्तुत है जैन विश्व भारती के परिवेश और सहयोग से अपने जीवन में ऊर्जा प्राप्त करने वाली कर्मचारी कुसुमलता सुराना के अनुभव)

"सन् 1992 में मेरा विवाह आगरा में हुआ। पूर्वकृत कर्मों का योग था कि वहां का वातावरण मेरे अनुकूल नहीं था। कुछ दिनों तक मैंने उन परिस्थितियों को सहन किया। इसी बीच मुझे सन् 1993 के अक्टूबर में एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। दो साल के पश्चात् मैं अपने पीहर लाडनूं आ गई। पीहर की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ नहीं थी।

सन् 1993 के अगस्त में पूज्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी जैन विश्व भारती में विराज रहे थे। मैंने उनको अपनी सारी स्थिति बताई। गुरुदेव ने मेरी बात को ध्यान से सुना। मैंने कहा – 'गुरुदेव! मैं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूं।' मेरी बात सुनकर गुरुदेव अत्यन्त प्रसन्न हुए और मेरी परीक्षा लेते हुए कहा – 'जैन विश्व भारती में तुम काम कर सकती हो लेकिन यहां कांटे ही कांटे हैं, क्या तुम उनको सहन कर लोगी?' मैंने निवेदन किया – 'आपके आशीर्वाद से मैं सब कुछ सहन कर लूंगी।' तब गुरुदेव ने फरमाया – 'अब पीछे मुड़कर कभी मत देखना, सब ठीक होगा।'

उसी दिन जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी चौपड़ा ने मुझे लिपिक के रूप में नियुक्त कर दिया। कुछ दिनों बाद मेरा स्थानान्तरण समणी कुसुमप्रज्ञाजी, जो आगम का कार्य करती हैं, उनके पास हो गया। लगभग एक साल बाद समणीजी की प्रेरणा से मैंने कम्प्यूटर सीखा एवं उसके बाद आगम का कार्य कम्प्यूटर पर करने लगी। समणी कुसुमप्रज्ञाजी के निर्देशन में कार्य करके मैंने बहुत कुछ सीखा। वर्तमान में मैं जैन विश्व भारती सचिवालय के अंतर्गत कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत हूं।

पिछले दो साल से मैं जैन विश्व भारती के परिसर में रहती हूं। मैं यह अनुभव करती हूं कि मेरी जैसी महिलाओं के लिए जैन विश्व भारती एक कामधेनु के समान है, जिसने मुझे समाज में गौरव के साथ जीना सिखाया। मैं गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति अपनी अनन्त श्रद्धा समर्पित करती हूं। आचार्यश्री महाश्रमणजी, साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। समणी कुसुमप्रज्ञाजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। मैं समस्त साधु-साध्वियों, समणियों व संस्था प्रबंधन के प्रति आभार ज्ञापित करती हूं। संस्था के सहयोग से आज मैं सुख-शांति के साथ अपना जीवन-यापन कर रही हूं। मेरा लड़का भी आज सी.ए. की उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है। मैं जैन विश्व भारती की आभारी हूं जिसके सहयोग और अभिप्रेरणा ने मेरे निस्तेज जीवन में ऊर्जा का संचरण कर मेरे जीवन को नई दिशा प्रदान की।"

लघु कथा

चौधराई में खींचतान

एक खरगोश के पीछे दो बाघ दौड़े। वह भागकर एक खोह में घुस गया। वहाँ एक लोमड़ी बैठी थी। उसने पूछा – तू प्राणों को हथेली पर लिए कैसे दौड़ आया?
'बहन! जंगल में सभी जानवर मिलकर मुझे चौधरी बनाना चाहते थे। मैं इस पचड़े में पड़ना नहीं चाहता था। इसलिए बड़ी कठिनाई से उनके चंगुल से निकल आया हूं' – खरगोश ने अपनी भयपूर्ण भावना को छिपाते हुए कहा।
लोमड़ी – 'भैया! चौधराई में तो बड़ा स्वाद है।'
खरगोश – 'बहन! यह पद तुम ले लो, मुझे तो नहीं चाहिए।'
लोमड़ी का मन ललचाया और वह चौधराई का पद लेने के लिए खोह के बाहर निकली। वहीं बाघ खड़े ही थे। उन्होंने उसके दोनों कान पकड़ लिए। वह कानों को गँवाकर तुरंत लौट आई।
खरगोश – 'अभी वापस क्यों चली आई?'
लोमड़ी – 'चौधराई में खींचतान बहुत है।'

(भिक्खु दृष्टांत, 298)

शासन व्यक्ति नहीं, मौलिकता करती है

धर्मचंद चौपड़ा, पूर्व अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

कोई भी व्यक्ति दूसरों की नकल कर आज तक महान नहीं बन सका है। सफलता का अनुकरण नहीं किया जा सकता। मौलिकता अपने आप में एक शक्ति है जो व्यक्ति की अपनी रचना होती है एवं उसी व्यक्ति का सम्मान होता है, जिसमें मौलिकता होती है। संसार उसी को प्रणाम करता है जो भीड़ में से अपना सिर ऊंचा उठाने की हिम्मत रखता है और जो अपने अस्तित्व का भान कराता है।

मौलिकता की आज जितनी कीमत है, उतनी ही सदैव रही है। जिस व्यक्ति के पास अपना मौलिक विचार है उसके लिए संसार रास्ता छोड़कर एक तरफ हट जाता है और उसे आगे बढ़ने का अवसर देता है। मौलिक विचारक तथा काम के नए तरीके खोज निकालने वाला व्यक्ति ही समाज की सबसे बड़ी रचनात्मक शक्ति होता है। अन्यथा ऐसे लोगों से दुनिया भरी पड़ी है जो पीछे-पीछे चलना चाहते हैं और चाहते हैं कि सोचने का काम कोई और करे।

यही कारण है कि बहुत से प्रतिष्ठान एवं संस्थाएँ पीढ़ियों तक प्रबल रहीं और फिर सिकुड़ते हुए बंद हो गई। कारण, लोग नई विधि से काम करने में घबराते थे एवं किसी न किसी का अनुकरण करते थे। उनका सिद्धांत होता था कि जो तरीका मेरे बाप-दादा के लिए अच्छा था, वही मेरे लिए अच्छा है। उनके मुकाबले नए आने वाले नवयुवक उन्हीं संस्थानों से निकलकर समय के साथ दौड़कर अपनी मौलिकता से एक-एक पग आगे रखते गए और तेजी से प्रगति करने लग गए।

यह भी दृढ़ धारणा न बनाएं कि आप काम को नए ढंग से करेंगे तो बस उतने में ही आपको सफलता मिल जाएगी। प्रभावशाली मौलिकता का ही मूल्य है ... प्रभावहीन एवं अव्यावहारिक मौलिकता का लाभ नहीं होता।

ऐसा देखते हैं कि कई संस्थानों में कभी किसी एक व्यक्ति की शक्ति बढ़ जाती है तो लोग समझते हैं कि यह एक भारी खतरा है इससे दूसरों का व्यक्तित्व दब जाएगा। तब लोग यह कहना शुरू करते हैं कि सत्ता एक आदमी के हाथ में नहीं होनी चाहिए उसे विकेन्द्रित कर दिया जाना चाहिए। पर देखा जाता है कि उस विकेंद्रीकरण में भी मौलिकता की ही प्रधानता होती है। प्रबल, मौलिक तथा शक्तिशाली व्यक्ति के शासन से छूटने का कोई उपाय नहीं है। कारण शासन व्यक्ति नहीं, मौलिकता करती है।

मौलिकता अपने भीतर से आती है या फिर कहीं से नहीं आती।

प्रामाणिकता के लिए सम्मान

जैन विश्व भारती के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी श्री मनोज कुमार टाक को उसकी चारित्रिक प्रामाणिकता के लिए संस्था के प्रबंध तंत्र द्वारा आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में दिनांक 11 मार्च, 2011 को गंगाशहर (राज.) में प्रशस्ति पत्र एवं रु. 3,100/- की नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री मनोज कुमार टाक को दिनांक 24 फरवरी, 2011 को सफाई कार्य करते समय परिसर स्थित कान्फ्रेंस हॉल में सोने की रत्न जड़ित एक मूल्यवान अंगूठी पड़ी हुई मिली थी, जिसे उसने तुरंत हूबहू स्थिति में जैन विश्व भारती सचिवालय में जमा करवाकर अपनी प्रामाणिकता का परिचय दिया। अंगूठी जिस व्यक्ति की थी उन्हें सूचना करवा दी गई। उनकी इस ईमानदारी और चारित्रिक वैशिष्ट्य की सभी ने हार्दिक सराहना की।

नए सफर का अनुभव

समणी शुक्लप्रज्ञा
समणी विनयप्रज्ञा

16 जनवरी, 2011, रतनगढ़ में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर से मंगल पाठ सुनकर हम समणीद्वय – शुक्लप्रज्ञा और विनयप्रज्ञा ने कोलकाता के लिए प्रस्थान किया। इस यात्रा का प्रयोजन था – सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग। नाम भी नया और विषय भी अनजाना। ऐसा लगा शायद कंप्यूटर के सॉफ्टवेयर से संबंधित कोई पाठ्यक्रम है। एक क्षण को विचार आया कि हमें अब कंप्यूटर में क्या सीखना है। मन में अनेक प्रश्नों को समाहित करते हुए हम पहुँचे कोलकाता श्री प्रकाश जी बैद के निवास स्थल पर। पता चला कि सुबह जे.डी. बिरला कॉलेज जाना है। वहाँ पर प्रदीप जी चौपड़ा सॉफ्ट स्किल की कक्षा लेंगे।

हमने सोचा कि चलो फिर से कॉलेज के दिनों में वापस आ जाएँ। हम कॉलेज पहुँचे। प्रदीप जी कक्षा में आए। कहा जाता है कि प्रथम प्रभाव ही अंत तक बना रहता है। प्रदीप जी की सहजता, विनम्रता एवं कोमलता सचमुच सराहनीय थी। जब कक्षा प्रारंभ हुई तो उनकी अध्यापन शैली भी अति प्रभावशाली लगी। उस समय पता चला कि सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग कंप्यूटर के सॉफ्टवेयर डिजाइनिंग का पाठ्यक्रम नहीं है, अपितु मानवीय मूल्यों के सॉफ्टवेयर डिजाइनिंग का पाठ्यक्रम है।

अगर जीवन में मूल्य न हो तो जीवन का कोई अर्थ नहीं होता। इसी सिद्धांत पर आधारित इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जीवन में मानवीय मूल्यों का विकास करना और व्यक्तित्व का रूपांतरण करना है।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का सुंदर सपना है, जिसका लक्ष्य मूल्यपरक शिक्षा तथा ज्ञान के साथ-साथ समृद्ध आचार को बढ़ावा देना है। लगभग दो दशकों से चल रहे अनेक कार्यक्रमों में अब सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग की एक नई कड़ी जुड़ने जा रही है।

अपने तीन महीने के इस अध्ययन के दौरान हमने अनुभव किया कि यह पाठ्यक्रम सचमुच परिवर्तन लाता है, क्योंकि व्यक्तित्व रूपांतरण का पहला सोपान है – आत्म निरीक्षण। इस कार्यक्रम की संरचना ऐसी की गई है कि हर शिक्षार्थी या संभागी को कुछ कहना है – स्वयं के सपने, जीवन का सर्वाधिक खुश क्षण, अपनी कमजोरी, क्षमा आदि विषयों पर। जिसमें उसके आत्मविश्वास, वक्तृत्व कला आदि के विकास के साथ-साथ स्वभाव में भी परिवर्तन नजर आता है, उसकी सोच में बदलाव होता है।

उत्साह, कृतज्ञता एवं योगदान करने की प्रवृत्ति, क्रोध प्रबंधन, आदत को बदलें आदि विषयों पर प्रस्तुति की जाती, जिनकी जरूरत व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक सभी क्षेत्रों में है। ऐसा कहा जा सकता है कि यह पाठ्यक्रम मानवीय संबंधों में मधुरता एवं आत्मीयता बढ़ाने का उपक्रम है, जिसमें भारत के प्राचीन संस्कारों को नए स्वरूप में आधुनिक भाषा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

जे. डी. बिरला कॉलेज में अध्ययन के पश्चात हम पहुँचे आईलीड इंस्टिट्यूट में, जहाँ प्रवेश करते ही ज्ञानात्मक वातावरण महसूस होता है। वहाँ हमारा प्रशिक्षण का दूसरा चरण प्रारंभ हुआ प्रयोग और परीक्षा के रूप में। वहाँ पर प्रदीप जी के निर्देशन में स्थानीय महिलाओं तथा महावीर जैन विद्यालय की नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों में हमने इस सॉफ्ट स्किल पाठ्यक्रम का अध्यापन किया। वहाँ हमने महिलाओं एवं बच्चों में उत्साह तथा व्यक्तित्व रूपांतरण की प्यास देखी। साथ ही उन्होंने एवं परिवार के लोगों ने बदलाव को महसूस भी किया। और सबसे बड़ी उपलब्धिं थी क्रोध को शांत करने तथा कृतज्ञता के भावों को अभिव्यक्त करने की पद्धति का विकास।

इन तीन महीनों के प्रवास में आनन्दपूर्वक साधना और अध्ययन का क्रम चला। इस दौरान हमें बहुश्रुत साध्वीश्री कनकश्री जी आदि साध्वीवृंद का वात्सल्य, प्रेरणा और प्रोत्साहन समय-समय पर मिलता रहा। उनकी मधुर वाणी हमारे लिए शीतल निर्झर का काम करती रही।

हमारी आवास तथा गमनागमन की व्यवस्था इतनी सुचारु रूप से रही कि हमारा अध्ययन निर्बाध रूप से चलता रहा। इसका श्रेय स्व. रणजीत जी बैद के परिवार को जाता है। इस संस्कारी परिवार के प्रत्येक सदस्य की धर्मनिष्ठा, संघनिष्ठा और कर्तव्यनिष्ठा अद्‌भुत है। परिवार की पुत्रवधुएँ कल्पना जी एवं अरुणा जी ने अंतर्भावों से हमारी हर तरह की आवश्यकताओं को पूर्ण किया। तीन महीने का लंबा प्रवास महसूस भी नहीं होने दिया।

हमारा अध्ययन निर्बाध एवं सुचारु रूप से चलता रहे, इसका पूरा दायित्व निभाया जैन विश्व भारती, लाडनूं के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी चोरड़िया ने, जिनकी व्यवहार-कुशलता, विनम्रता और गुरुनिष्ठा प्रशंसनीय है।

न तो हम यह पाठ्यक्रम कर पाते और न ही आज मैं अपना अनुभव लिख रही होती अगर प्रदीप जी चौपड़ा का निमंत्रण न होता कि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से समणी जी आकर इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करें। विश्वविद्यालय के सारे सपने प्रदीप जी के अपने हैं। ऐसे उत्साही दूरदृष्टि संपन्न व्यक्ति का विश्वविद्यालय के साथ संयोग शुभ संकेत है। सॉफ्ट स्किल इनका पैशन है, इनका जीवन है यह हमने हमेशा महसूस किया है।

सबके प्रयास से कई जैन एवं जैनेतर संस्थाओं में कार्यक्रम रखे गए, जैसे गंगाशहर नागरिक परिषद, इनर व्हील, उडयन क्लब, डीटीपीए, टीपीएफ, रोटरी क्लब, एएनएमआई, जे डी बिरला कॉलेज, स्थानकवासी महिला मंडल, आदि। जिससे लोगों में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय एवं प्रेक्षाध्यान के प्रति जागरूकता आई है। हॉर्टीकल्चर गार्डेन, अलीपुर में प्रातःकाल नियमित रूप से ध्यान की कक्षाएँ प्रारंभ की गई हैं, जिसका संचालन निरंतर श्रीमती कल्पना बैद और श्वेता दसाणी द्वारा किया जाएगा।

हमारी अनन्त कृतज्ञता परम श्रद्धेय पूज्य प्रवर एवं श्रद्धेया महाश्रमणी जी के प्रति है, जिन्होंने हमें यह सुंदर अवसर दिया, जो हमारे ज्ञान ही नहीं, अपितु साधना को भी सुदृढ़ करने में सहयोगी बना। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा जी, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने हम समणीद्वय को इस अध्ययन में नियोजित कर हमें अनुगृहीत किया।

अस्तु, यही कहना चाहूँगी कि यह उपक्रम जन-जन में सद्‌भाव की चेतना जगाए। जैन विश्व भारती, लाडनूं के प्रांगण में सौहार्द, मैत्री एवं आत्मीयता के फूल सदैव खिलते रहें। भगवान महावीर का संदेश हम सबके भीतर आत्मसात होता रहे।

प्रतिभा का पुरस्कार

जैन विश्व भारती सचिवालय में कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत श्री प्रमोद कुमार के सुपुत्र श्री असित रंजन ने वर्ष 2010 की सी.ए. – सी.पी.टी. की परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सीकर केन्द्र से छठा एवं सम्पूर्ण भारत में 31वां स्थान प्राप्त किया है। श्री असित रंजन को जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं।

जैन विश्व भारती के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा को सरोपा सम्मान

श्री सुमेरमल सुराणा को सिख समुदाय द्वारा सरोपा प्रदान कर सम्मानित किया गया, जिसमें उन्हें एक तलवार, शॉल और दुपट्टा प्रदान किया गया। श्री सुराणा को यह सम्मान कोलकाता स्थित बड़ाबाजार में सिखों के ऐतिहासिक सिख संगत को केन्द्रीय सरकार के संबंधित विभाग द्वारा ऐतिहासिक स्थल घोषित कराने में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के लिए दिया गया। वे पूरे जैन समुदाय के प्रथम अधिवक्ता है, जिन्हें पश्चिम बंगाल के बार कॉन्सिल की अनुशासनिक समिति के अध्यक्ष के रूप में दो वर्षों के लिए चुना गया था। इनके निर्णय के विरुद्ध केवल उच्च न्यायालय में ही अपिल की जा सकती है। वे इस पद पर दूसरी बार चुने गए हैं।

श्री सुमेरमल सुराणा वर्तमान में जैन विश्व भारती के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के रूप में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। उनकी इस उपलब्धि के लिए जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

जैन विश्व भारती के मानद सदस्य डॉ. महावीर गोलछा को इन्सपायर अवार्ड

राजस्थान के बालोतरा मूल के डॉ. महावीर गोलछा को भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रतिष्ठित ईसपायर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार स्नातकोत्तर स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ताओं तथा उच्च स्तरीय अनुसंधानकर्ताओं को प्रदान किया जाता है। डॉ. गोलछा नई दिल्ली स्थित 'एम्स' में मस्तिष्कीय रोगों पर अनुसंधान कर रहे हैं। हाल ही में विश्व कांग्रेस एवं यूरोपियन कांग्रेस ने डॉ. गोलछा को 'युवा वैज्ञानिक पुरस्कार' देकर सम्मानित किया है। डॉ. गोलछा आचार्य महाप्रज्ञ की चिकित्सा सेवा से जुड़े हुए थे। जैन विश्व भारती को भी मानद सदस्य के रूप में इनकी सेवाएं एवं सहयोग प्राप्त होता रहता है।

जैन विश्व भारती डॉ. गोलछा को उनकी उपलब्धियों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देती है।

संस्थान का वरिष्ठतम कर्मी

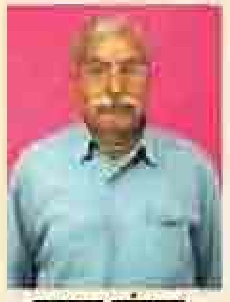

नथमल सांखला

(किसी भी संस्था के उत्थान और पतन में उसके कर्मियों का विशिष्ट योगदान होता है। समर्पित, जागरूक एवं कर्मठ कर्मियों से ही संस्थान प्रगति के पायदानों को पार करता है। जैन विश्व भारती ने भी चार दशकों की यह विकास यात्रा अपने समर्पित एवं जागरूक कर्मियों के सहयोग से तय की है। आज भी इस संस्थान में कई ऐसे कर्मचारी हैं, जो जैन विश्व भारती के शैशवकाल से जुड़े हैं और इसकी लम्बी विकास यात्रा के साक्षी बने हुए हैं। ऐसे ही वरिष्ठ एवं अनुभवी कर्मियों के सहयोग से संस्थान लाभान्वित होता रहा है। प्रस्तुत है संस्थान के वरिष्ठम कर्मी श्री नथमल सांखला के समर्पण एवं निष्ठा भाव की झलक उसी के शब्दों में)

"मैं सन् 1978 से जैन विश्व भारती में बागवानी का कार्य कर रहा हूं। यहां कार्य करके मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। यहां मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। जैन विश्व भारती परिसर में वर्षों पहले मेरे द्वारा लगाए गए पौधों को आज बड़े-बड़े वृक्षों के रूप में परिसर की सौन्दर्य वृद्धि करते हुए देखकर मुझे जो प्रसन्नता एवं आत्मतोष का अनुभव होता है उसे शब्दों में बयान करना कठिन है। मुझे यहाँ के प्रबंधतंत्र से पूरा स्नेह, सहयोग और अपनत्व प्राप्त होता है। मैंने प्रारंभ से ही यहाँ निष्ठा के साथ कार्य करने का प्रयास किया है। मैं यही कामना करता हूं कि आगे भी यह निष्ठा भाव बना रहे एवं मैं संस्था को तन-मन से अपनी सेवाएं देता रहूं।"

परिवार एक योगदान अनेक

श्री रवीन्द्र महतो, श्रीमती सुनीतादेवी महतो
श्री राहुल महतो तथा श्री सुनील महतो

(एक परिवार के रूप में जैन विश्व भारती ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इसी का परिणाम है कि जैन विश्व भारती परिसर में रहने वाले परिवार, जिनके सदस्य विभिन्न रूपों में संस्थान से जुड़े हैं, इसकी वर्धापना में अपना योगदान दे रहे हैं। प्रस्तुत है एक ऐसे ही परिवार का परिचय जिसका हर एक सदस्य जैन विश्व भारती के विभिन्न प्रकल्पों में योगभूत बनकर संस्था के विकास एवं उत्थान में सहयोगी बन रहा है।)

जैन विश्व भारती के साधना केन्द्र तुलसी अध्यात्म नीडम् में सन् 1982 से रसोइये के रूप में कार्यरत श्री रवीन्द्र महतो का परिवार इस संस्था के लिए परिवार एक योगदान अनेक के कथन को अक्षरशः प्रमाणित कर रहा है। लगभग 30 वर्ष पूर्व वासुदेवपुर (बिहार) से कार्य की तलाश में श्री रवीन्द्र महतो का लाडनूं आगमन हुआ। उस समय से आज तक अपनी निष्ठा एवं समर्पण भाव से यह व्यक्ति संस्थान को अपनी सेवाएं दे रहा है। इस संस्था से उसे कार्य एवं आश्रय दोनों मिले हैं। अपने बच्चों को यहीं शिक्षा प्रदान की। आज इस परिवार के सदस्य जैन विश्व भारती के विभिन्न प्रकल्पों से जुड़े हुए हैं। परिवार के मुखिया श्री रवीन्द्र महतो तुलसी अध्यात्म नीडम् में रसोइया हैं, उनकी पत्नी श्रीमती सुनीतादेवी महतो विमल विद्या विहार में आदेशपाल हैं, उनके एक पुत्र श्री राहुल महतो भी विमल विद्या विहार में आदेशपाल हैं तथा दूसरे पुत्र श्री सुनील महतो सचिवालय में कंप्यूटर ऑपरेटर हैं।

बाल पृष्ठ

भारत हमारा देश

सबसे सुंदर, सबसे प्यारा
जग में अनोखा देश हमारा
इसकी शान न मिटने देंगे
ऐसा कुछ हम काम करेंगे।
बढ़ाएंगे अपने देश का मान
करेंगे तिरंगे का सम्मान
होगा जग में नाम हमारा
तारों की तरह चमकेगा न्यारा
फूलों की तरह हम महकेंगे
ऐसा कुछ हम काम करेंगे।

दिया सिंगल
महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर

सफलता

सफलता नाम की सीढ़ी ऐसी,
चढ़ना चाहता है हर कोई।
यह मानव मन की मंजिल,
पहुंचना चाहता है हर कोई।
ये है मनुष्य की चाहत
पाना चाहता है हर कोई।
ये है एक पहेली
हल करना चाहता है हर कोई।
ये है फूल की खुशबू,
महक पाना चाहता है हर कोई
मेहनत करके चलता जो इस पर,
तो सफल होता है हर कोई।

प्रेक्षा सोनी
विमल विद्या विहार, लाडनूं

पर्यावरण प्रेम

आओ हम सब वृक्ष लगाएं
पर्यावरण को मित्र बनाएं
चारों तरफ हरियाली लाएं
वातावरण को शुद्ध बनाएं

अगर हम सब वृक्ष लगाएं
तो हम सब सुख पाएंगे
चारों तरफ खुशियां होंगी
दुःख के बादल छंट जाएंगे

आज इंसान बन गया स्वार्थी
फिक्र नहीं करता जहान की
आओ आज संकल्प करें हम
अपने स्वार्थ का त्याग करें हम

सब मिल पेड़ लगाएंगे
लता गुल्मों को हर्षाएंगे
जीवन बंधु पर्यावरण है
हर कीमत पर उसे बचाएंगे।

मालविका सुथार
महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर

समझो वक्त का मोल

एक वर्ष : इसकी कीमत पूछिए उस विद्यार्थी से जिसने लगातार मेहनत की हो, मगर अंतिम परीक्षा में असफल हो गया हो।

एक दिन : इसकी कीमत पूछिए उस 'मजदूर' से जो दस व्यक्तियों के परिवार में कमाने वाला अकेला है और एक दिन उसे काम न मिले।

एक घंटा : इसकी कीमत उस व्यक्ति से पूछिए जो जरूरी काम से किसी का इंतजार कर रहा है और वह एक घंटा देरी से आए।

एक मिनट : इसकी कीमत उस व्यक्ति से जानिए जिसकी मां अंतिम सांस ले रही हो और मां से मिलने जाने के लिए उसकी गाड़ी एक मिनट पहले छूट गई हो।

एक सेकेंड : इसका मूल्य जानिए उस 'ड्राइवर' से जिसका हाथ एक सैकंड के लिए बहका और गाड़ी दूसरी गाड़ी से टकरा गई हो।

सेकेंड का सौवां हिस्सा : इसकी कीमत पूछिए उड़नपरी पी.टी. उषा से जो इतने कम समय से ओलम्पिक में मैडल जीतने से पीछे रह गई।

श्रेय चोरड़िया
विमल विद्या विहार, लाडनूं